जोगिनी ग्रहै भंजै सुधर। रेनसीह साको करै॥
म्लेछांह म्लेछ धर भोगवै। इह निहंच हम उच्चरै॥
छं० ॥ ३ ॥

रावल जी का अपने पुत्र रतनसिंह को राज्य देकर निगम बोध की यात्रा के लिये तैयार होना।

दूहा॥ सभा करी रांवर समर। बैठे सूर सबान॥
निगम बोध भेटन सुतिय। चलियै दिल्ली थान॥
छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ पट्ट कज। रावल पुत्र रतंन॥
नित्त सु रष्यिय हट्ठ करि। घन प्रमोधि परिजंन॥
छं० ॥ ५ ॥

कवित्त॥ समर सिंघ निज पट्ट। थप्पि रावल रतंनं॥
दोहित्ती सोमेस। अनष भरि कुंभ करन्नं॥
दष्यिन दिसि संक्रमिय। मिलि यह बसी पति साहं॥
विदुर नयर दिय पटें। रहिय अनुचरि तिहि ठाहं॥
वीराधि बीर बज्जाय षग। हनिय वन्न तन करि उतन॥
इह सुपन रयनि सहि चंद कहि। चलि पुमानगढं क॥
छं० ॥ ६ ॥

रावल जी का अपने मातहत रावतों को इकट्ठा करके देवराज को गढ रक्षा पर छोड़ना और पृथा सहित आप निगम बोध को कूच करना।

दूहा॥ सुरज कोट गढ पौलि सजि। नालि गोलि चिहुं तीस॥
तीरंदाज अभूल भर। रषि चोकी अहनीस॥
छं० ॥ ७ ॥

षटकोस परिमान गढ। ऊरध प्रयुलंबाब॥
सजल सरोवर कुंड भरि। झिरना झरन सुहाब॥
छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ तिहि बेरां तिहि काल। फटे कग्गर चावहिसि ॥
अब्बू गढ जालौर। गए आमद बूंदी दिसि ॥
ईंडर गढ गोडवारि। धरा उज्जैन धरज्जिय ॥
रिनथंभोर हराइ। सांढि चढि तेरह तात्तिय ॥
पब्बेर जौनि सिलहै पवंग। साज बाज सब दिष्षियै ॥
नीसान घाव बज्जे निहसि। कोंन चितोरह रष्षियै ॥
छं० ॥ ९ ॥

रष्षि थान देवराज। गढ़ चित्रकोट भलायौ ॥
सत्त सहस असवार। अट्ठ ग्रह जाप करायौ ॥
किय डेरा दश कोस। प्रिथा लीनी अप सथ्थह ॥
स्वाति सुकल पष तीज। चल्यौ रावर मनु पथ्थह ॥
हय सहस सथ्थ असवार हुअ। प्रस्थानौ अप्पन कस्यौ ॥
दस दिवस रष्षि प्रस्थान तें। करें फौजै रह संचर्यौ ॥
छं० ॥ १० ॥

रावळ जी की तैयारी और उनकी सेना के हाथी घोड़ों की सजावट का वर्णन।

पद्धरी। सजि चल्यो कटक रावर नरिंद। मानोंकि पथ्थ दुरजोध इंद ॥
पंचास हाथि सुंडाल सथ्थ। मैंमत्त चलैं जनु इन्द्र पथ्थ ॥
छं० ॥ ११ ॥

उम्भारि सुंड क्रौडंत तेह। मानों कि नाग वन मरुत लेह ॥
गढ़ पारि भारि पाहार गंम। गुंजरे भौंर पठ रत्ति भुम्म ॥
छं० ॥ १२ ॥

पगथंभ भावै तन मेर रूप। सुंडाल सेस तिन चढे भूप ॥
उप्पंम चंद किरनाल जोति। नव जटित नवग्रह जानि द्योति ॥
छं० ॥ १३ ॥

गिर भरन जा मद स्रवत जात। धज नेज भुम्म घुघ्घर भुरात ॥
पट डोरि कसन गजवागं साहि। उपरस्स भूल भमकंत ताहि ॥
छं० ॥ १४ ॥

ढाले सिंदूर सीसह सुलाल। मनु स्याम कूट डारी गुलाल।
तिन देषि शत्रु होवत विहाल। अरियट्ट भंजनह रूप काल॥
छं०॥ १५॥

आंतस चरिच अनभंग थान। गज थट्ट बट्ट गिरि चले जानि॥
तिन पुट्टि तुरी पष्षर समेत। रथ सूर जानि आनि सुहेत॥
छं०॥ १६॥

उंचास भास परबत समान। ढिल्लै पहार छत्तिय प्रमान॥
परगोस मधय पुट्ठीं सरोज। आछादि वस्त्र अनेक मौज॥
छं०॥ १७॥

घरि एक पलक पल प्रान पील। नाचंत नट मानौं असील॥
हाकंत सबद छुट्टंत वाय। हुंकरत तेज मुट्ठी समाय॥
छं०॥ १८॥

(१)अपंम जरित नग जीनं जोति। मानों कि सिद्ध उर प्रगटि द्योत॥
पष्षर समत जगमग पलान। मानों कि सघन महि डग्गि भान॥
छं०॥ १९॥

तुरकी ऐराक कच्छी बँगाल। हबसीय गोल नाचंत भाल॥
ताजी सँग्राम ते धुंधमार। पुञ्जैन वान मानै न सार॥
छं०॥ २०॥

अनेक जाति अनेक रूप। तिन चढ़े दिग्गवर जाति भूप॥
मानौं समंद सरिता हिलोर। मिलि आय जानि बरषा सजोर॥
छं०॥ २१॥

सजि समर फौज अप्पह समान। मानह, अषाढ जलहर प्रमान॥
* * * * * * * * छं०॥२२॥

कवित्त॥ है षुररज उच्छलिय। तिमिर विफुरिय धुंध परं॥
तरनि रंग रस मिलिय। घोर घुघ्घरिय रुहिर सर॥
चष्य जुअल संजरिय। कमल उल्लसिय विमल जल॥
पथिक पयंबल लहिय। मथन घस नेह तुभ्भ दल॥

(१) को.—उपंम।

जोवंति सिंघ अरिदल दमन। नह सुभ्भै करमाल कर॥
टल टलिय परिय कंपिय सघन। समर पयाना रंभ भर॥
छं० ॥ २३ ॥

रावलजी का आंबेर में डेरा डालना और जुव्वन गढ़ के रावत रनधीर का रावलजी का लश्कर लूटने को धावा करना।

कूच कूच करि पैर। प्रथा डोला दोइ सथ्थह॥
सत्त एक वाजिच। चले उमराव समथ्थह॥
किय डेरा आंमेर। कोस दोइ उप्पर कढ्ढियं॥
सहस तीस दोइ सथ्थ। जुव्वन गढ़ रायां हढ्ढिय॥
किन कही वत्त रावर समर। इह राजा चीतौर पति।
तब कही बत्त रन धीर भर। इह अलोच किज्जै सुमति॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ रावर न्रपति। कटक लैह सब घेरि॥
जो सद्धौ चीतोर पति। तौ डेरा आंबेर॥ छं० ॥ २५ ॥
हुई[1] हुह हलहल हुई। छुटि गयंद मै मत्त॥
मानों प्रब्बत [2]धन सिषर। चले फौज अनुरत्त॥ छं० ॥ २६ ॥

विराज ॥ चढ्यौ मंगि बाजं। रिनं धीर राजं॥
चली फौज अग्गं। इला मग्ग भग्गं॥ छं० ॥ २७ ॥
अनंभी जुवानं। षंचै तोन बानं॥
हुए हीस बाजं। चवंदिस्सि गाजं॥ छं० ॥ २८ ॥
मनों अंग होरी। दिसा संधि धोरी॥
चढै अप्प अप्पं। मनों सिद्ध दप्पं॥ छं० ॥ २९ ॥
बजे षग्ग रालं। उड़ै दब्बि नालं॥
मनों तुट्टि तारं। लग्यौ सेस भारं॥ छं० ॥ ३० ॥
षहं लग्गि बानं। दब्यौ धूरि भारं॥
बजे सूर साजं। गयनं सु गाजं॥ छं० ॥ ३१ ॥

---

(१) मो.-कूह। (२) कृ. ए.-थन।

करे फौज तीनं । अगं चित्त दीनं ॥
घटा बंधि फौजं । धरा लेन मौजं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उक्त समाचार पाकर रावलजी का निज सेना सम्हालना ।

दूहा ॥ षबरि भई रावर समर । दोन्यौ पट्टन राय ॥
संड्यौ पहु प्रथिराज की । ज्यौं चिचकोट सुभाइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कह्यौ आइ रावर समर । तब सिर लग्गी झार ॥
को रनधीरह बप्पुरौ । मो सों मंडै आल ॥ छं० ॥ ३४ ॥
फौज फौज सिलहों सजी । । षह गज्जें घनघोर ॥
कुरिय अप्प रावर चव्यौ । भयौ कुलाहल सोर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
छुट्टे षंभू थान ते । चले मत्त गजराज ॥
दधि फटक्कि फट्टकि गगन । उलटि सुभट जुध साज ॥ छं० ॥३६॥

रनधीर का अपनी सेना को चक्रव्यूह रच कर रावलजी की सेना को घेर लेना ।

कवित्त ॥ चक्रव्यूह रन धीर । सहस दस बीसं दोय सजि ॥
आडंबर बहु करिय । मनों पल्लव भद्रव गजि ॥
दंति सहस बर मत्त । फिरै चावद्दिसि बिंध्यौ ॥
चिचकोट कन्हा नरिंद । जानि जस सों जम जुध्यौ ॥
दंताल देत लग्गा भिरन । मानो कट्ट कबार किय ॥
बिच फौज रुक्कि रनधीर मुष । जानि बाज तीतर परिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

रावलमीर रनधीर का युद्ध, रनधीर का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ उठे वीर 'बद्दे बके थान थानं । जगी जोग माया सुरं अप्प मानं ॥
जगे भूत वेताल भुसाल पद्दं । भिरे एक जामं बिहद्दं सु हद्दं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
बजे तार रनतूर षग्गं उनंगं । तिनं वेर कन्हं रमै रोस रंगं ॥
षलक्कंत श्रोनं बहै रत्त धारं । सिरं हथ्थ ईसं उड़ै तुट्टि सारं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो.- वद्द ।

हहकंत कूदंत नंचै कमंधं। कडक्कंत बज्जंत छुट्टंत संधं ॥
'लहक्कंत लूटंत तूटंत भूभं। झुकंते धुकंते दोज बथ्थ झूमं ॥
छं० ॥ ४० ॥

दडक्कंत दीसंत पीसंत दंतं। करी कन्ह केली परे सूर पंतं ॥
गयौ कन्ह चालुक्क अग्गें उतंगं। रिनं धीर वाही लगे कंध षग्गं॥
छं० ॥ ४१ ॥

लगी नाग मुष्षी छती पुट्टि फारे। पर्यौ धीर षेतं सु चंदं उचारे॥
परे सेन चालुक्क सथ्थं समथ्थं। भरें अच्छरी आनि अन्नेक रथ्थं
छं० ॥ ४२ ॥

कँन्हा आय मुर्छा लग्यौ धारभारं। परे सत्त तोषार चिंतोर सारं॥
परे चालुकं सेन थट्टं सुघट्टं। परे सत्त तीनं बियं पानि लुट्टं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सथ्थ रनधीर। भंजि सेना चालुक्की ॥
तीन सत्त धर परे। जानि लग्गी तन भूकी ॥
सौध्यौ रन सीसोद। कन्ह पट्टं बंधायं ॥
प्रथा कंत हुअ जैत। सषी मुगतान बंधायं ॥
दैदास सथ्थ अप्पन सुपर। बीस रोज मुक्काम किय ॥
जिन घाँव अंग लग्गे भरन। तिनह सीष चिचकोट दिय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

संयोगिता के प्रधान का रांवलजी को दस कोस की पेशवाई देकर लेना और निगम बोध पर डेरा देना।

कन्ह लयौ अपसथ्थ। चले दरकूच महाभर ॥
कुसल हुई सब सथ्थ। गयौ जोगिन प्रथ्थावर ॥
संजोगिता प्रधान। आय संमुह दस कोसह ॥
कोस पंच सामंत। पुच्छि परिगह आलोचह ॥

(१) ए. कृ. को.-हलक्कंत ।

डेरा कराय तीरथ्थ तट। निगम बोध में थ्यौ तवह ॥
मुत्तिय बधायौ थाल भरि। करि आनंद ईंछिनि जबह ॥
छं० ॥ ४५ ॥

रावलजी का सब आदर सत्कार होना परंतु पृथ्वीराज तक उनकी अवाई की खबर तक न होना।

लई प्रथा मधि राज। सुधि न पाई प्रथिराजह ॥
तीन सत्त सुभ नारि। सषी मनमुत्ति सु साजह ॥
संजोगित परधान। दियौ सीधौ उमरावह ॥
सत्त तीन भरि छाव। चली कनवज्जनि धावह ॥
चौडोल केक रथके अरुहिं। बहिल केक तुरियन चढिय ॥
मानौं कि देव इंद्रानि लै। रूप भाग सबगुन बढिय ॥
छं० ॥ ४६ ॥

संयोगिता के यहां से दासियों का रावलजी के डेरे पर भोजन पान लेकर जाना।

दूहा ॥ करि मंजन रंजन बहुल। सुरंग अगर घन सार ॥
नवला अंजित नयन जुग। कनक षंभ मनितार ॥ छं० ॥४७॥
बस्त्र अनेक सुरंग तन। दमनक 'साथह लाय ॥
जरि जेहरि पाइन जरिय। सजि भूषन षोड़साय ॥ छं० ॥ ४८ ॥
लघुनराज ॥ रजंत भूषनं तनं। अलक्क छुट्टयं मनं ॥
सुचंद मुष्ष रागिनी। मनो बदन्न नागिनी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
उवट्टनं स उज्जलं। सुरंग रत्ति मज्जलं ॥
सुधा सुसेत दिष्षही। सु रोमराइ पिष्षही ॥ छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-साषह।

मनो कि गंग भारथी। सुभान चक्र सारथी ॥
अभूषनं विराजयं। ग्रहंत रत्ति साजयं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
पगं जराइ जेहरं। मनों कि भद्द मेहरं ॥
गढीस लग्ग सध्यही। सुपिंड पानि रथ्थही ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सुमेषला सु कट्टयं। म्रगं सु राज घट्टयं ॥
ग्रहं नंषिच मंडयं। दुकेत राह छंडयं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
जुहार कंठ सुभ्भई। सु मेर गंग षुभ्भई ॥
बेरष्य बाहु बंधयं। सु साष सेस गंधयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
जरित्त चूरि फुंदिनी। सुमेर ज्यौं फुनंदिनी ॥
विराज कंठ दोवरं। कि गंग मेर ओदरं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
सुहष्य गुंथि बेनियं। कि दीपमाल रेनियं ॥
वरष्य अट्ठ अट्ठयं। सवक्क हंस तट्टयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
चढी चौडोल अंबरं। मनों कि मेघ घुम्मरं ॥
चली सु अग्ग पच्छयं। इंद्रानि जानि कच्छयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
पचीस छाव अंबरं। असीस सुक्कली भरं ॥
मिष्टान छाब सट्टयं। अनेक रंग मिट्ठयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
बतीस भांत्ति मंसयं। सु सादि सुद्ध अंसयं ॥
सुरंभ तीस कट्टयं। कपूर भार पट्टयं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
जवादि केसरं सुरं। पलं सु सत्त अंतरं ॥
हजार तीन छूनयं। बतीस छाव दूनयं ॥ छं० ॥ ६० ॥
पँचास सत्त छप्पियं। कपूर पान डब्बियं ॥
जराव जेब सट्टयं। जैचंद पुत्ति पट्टयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दासियों का रावल जी से संयोगिता की असीस और शिष्टाचार कहना।

दूहा ॥ सषी सकल उत्तरि चली। पंकति करि सब सथ्थ ॥
छच धन्यौ चित्तोर पति। आय षडी रहि तथ्थ ॥ छं० ॥ ६२ ॥
गाथा ॥ संजौगिता असीसं। सुक्कलियं राज चित्रकोटं ॥
अति सनमान जगीसं। आइयं भाग अम्हाई ॥ छं० ॥ ६३ ॥

रावलजी का सखियों का आदर करना और उनसे पृथ्वीराज का हाल चाल पूछना ।

दूहा ॥ आदर सषी अनंत किय । कहौ दिल्लियपति बत्त ॥
चार मास संजोगि ग्रह । [1]सुष विलसै नित ग्रत्त ॥ छं० ॥ ६४ ॥

सखियों का रावलजी को मितीवार सब बीतक सुनाना ।

कवित्त ॥ हाव भाव वग्गुरि विथार । विनय षुंटी अति ढुक्किय ॥
कुचतरिया दुहु पष्ष । मूल चष्ष हरती छुट्टिय ॥
[2]हांकी अहर सुरत्त । लियौ संभर पति घेरिय ॥
छुट्टे सब परिवार । कहै संभरि पति चेरिय ॥
संभलै बत्त रावर समर । है हथ्थी परिगह सुभर ॥
दरबार राज भय भीति दिषि । बहु [3]लिछी पतिसाह धर॥छं०॥६५॥
धर लीनी भेहरा । परचौ वंधह पम्मारह ॥
लूटि सहर लाहौर । गए द्रब कोरि अपारह ॥
दूह कीनी पुंडीर । हयौ सौदागिर धीरह ॥
बेरी चावंड राय । राउ भोंहा गँग तीरह ॥
माल दे मौति देवराज गय । हाहुलि फिरि नैठौ हियै ॥
जादवन सेन संभौ भिरै । दिल्लीसर मध्ये हुवै ॥ छं० ॥ ६६ ॥
जे विपरीतह देषि । हुए राजान समथ्थं ॥
जे गिरिवर न छिपंति । हुए धरपति सिर छत्तं ॥
जे डरि देते दंड । तेन फिरि दंड नगौरह ॥
वल्लोची बल राए । ढुरै सिर उप्पर चौंरह ॥
गोरी नरिंद दस लष्ष हय । संभरि पति सल्लै हियै ॥
पंचास दून दोबीस घटि । सो कनवज्ज झुझाइयै ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हयौ बान कैमास । सूर कनवज्ज झुझाये ॥
चौ अग्गानिय सट्ठि । सट्ठ पंगानी ल्याये ॥
पतिकुल पिता संघारि । म्लेच्छ सुष हुऔ ततच्छिन ॥
मतै गयौ कैमास । सुहौ दिल्लिय धर रष्षन ॥

(१) मो.-सुख विलसत हुअ नित्त । (२) ए. कृ. को. कहा । (३) मो. लिच्छिय ।

दरबान नहीं सिर [1]लच्छियां। मरद भेष मिहरी रहै॥
सैतान भाग अवग्रह ग्रहै। धर गोरी छत्ती दहै॥ छं०॥ ६८॥
चावंड बेरी घांत्त। किति षोई रस लड्डौ॥
थट्टा पंगुर देस। साहि कोरी धर षड्डौ॥
रजनी ठग दिन ठग्ग। सुचित दुचिता संसारह॥
इह गोरी तन रत्त। ग्रही गोरी धर मारह॥
अवधूत धूत नागिनि डस्यौ। विष लग्गौ लोरें लवन॥
रहते सु अंसुं रघ्यौ नहीं। भई बत्त तीनो भुअन॥ छं०॥ ६९॥

उक्त समाचार सुनकर रावलजी का शोक प्रगट करना।

दूहा॥ सिर धुन्यौ रावर समर। दई सीष सब नारि॥
पानि कपूर सु हथ्थ दिय। कहि संजोग जुहार॥ छं०॥ ७०॥

पृथा का रानी इंछनी के साथ रहना और जैतराव का रावलजी की खातिरदारी करना।

प्रथा रनत इंछिनि महल। सुख विलास मिलि जोग॥
भ्रात चरित्तह दिष्षि सब। लग्यौ मन्न संयोग॥ छं०॥ ७१॥

कवित्त॥ जैतराय पम्मार। करिय मनुहार चिचपति॥
मधुर सुं मेवा अनत। मंस मिष्टान अजब भति॥
सौंधौ मन सैं पंच। साक पल्लव तैला अम॥
दही दूध अनपाह। घृत मन असी अनोपम॥
ऐराक बंस जोमेह जरे। भरी छाव बिधि बिधि भल्ली॥
पहुंचाय निगम रावर समर। हुई जैत अप्पन वल्ली॥
छं०॥ ७२॥

कुमार रेणसीजी का सब सामंतों सहित रावलजी के लिये गोठ रचना।

दाहिम्मै चावंड। करी मनुहारि सबन भर॥
एक पुरंगम अच्छ। फेरि सुह अग्गै रावर॥

(१) ए. कृ. को.-लट्ठिया।

बलिभद्रह कूरंभ। छून ऐसो अट्टारै॥
जर उजवक हय एक। ढिल्लि अंठनि गिरि डारै॥
रामदे राव षीची प्रसंग। जामानी जद्दव बल्लिय॥
पम्मार सिंघ इत्ते सुभर। इन सु गोठि छत्रपति कल्लिय॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ [1]रेन कुंअर गोठह रचिय। विविधि भांति सब नूप॥
सुरंभ घृत सौंधो सघन। कीनौ जीमन भूप॥ छं० ॥ ७४ ॥

गुरुराम का रावलजी को आशीर्वाद देना और कविचंद का विरदावली पढ़ना।

पद्धरी ॥ सामंत सबन मनुहार कीन। प्रोहित्त राम आसीस दीन॥
हर सिद्ध दिस बरदान भट्ट। उच्चर्यौ चंद पेषे सुथट्ट॥
छं० ॥ ७५ ॥

दुह, पष्य चवर सिर धरिय छत्र। बरदाय देत आसीस तत्र॥
उट्ठयौ सिंघ बरदाइ देषि। बोलंत बिरद बहुविधि विसेषि॥
छं० ॥ ७६ ॥

चीतौररराइ काइम्म कीन। घुम्मान पाट पग अचल दीन॥
मेरगिरि सरि चित्तौर मानि। किरनाल तेज बढ्ढै घुमान॥
छं० ॥ ७७ ॥

जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मांनो कि गुरग [2]तनु मोर पीन॥
कलकियां राय केदारराय। कब देत बिरद मनु उमंग चाय॥
छं० ॥ ७८ ॥

पापियां राइ प्राग्वट समान। कप्पन दरिद्र करतार जान॥
हित्यार राइ कासी अभंग। मदुआन राइ गंगा उतंग॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुरतान मलन बंधन समोष। हिंदून राइ टालंन दोष॥
उज्जेन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ [3]जुष्टरह वथ्थ॥
छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-रेनं कुवरं गोठ सुकरिय। (२) ए. कृ. को.-जनु। (३) मो.-युजिष्टरह।

भीमंग राइ भंजन सुषेत । जस लयौ धवल राजिंद जैत ॥
रिनथंभ राइ सिर दंड कीन । अब्बुआ राइ गड़ लेइ दीन ॥
छं० ॥ ८१ ॥

उथ्थाप राइ थापन समथ्थ । सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ ॥
दष्पनी साहि भंजन अलग्ग । चंदेरि लिड़ि किय नाम जग्ग ॥
छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ जग ऊपर जगदीस गनि । म्रत्तलोक दिल्लेस ॥
कै तूं फनि चिचंग पति । आह इमो नरेस ॥ छं० ॥ ८३ * ॥

रनधीर को परास्त करने के लिये कवि का कंन्हा को भी बधाई देना ।

गाथा । कंन्हा दिया आसीसं । सध्धौ रनधीर षेत षै रंडै ॥
अट्ठा अट्ठावीसं । षग्गं तेजाय तेजरं तुट्ठं ॥ छं० ॥ ८४ ॥
असि गह महद्दर बारं । भारं सेसाइ सेस फनि इंदं ॥
विम्भूतं अनपारं । समवर करसार समर रावरयं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

रावलजी का कविचंद से चंद्रवंश की उत्पत्ति पूछना और कवि का इला और बुध का इतिहास कहना ।

कवित्त ॥ रावर पुच्छिय समर । सोम रवि वंस प्रकारं ॥
बरनिं कहिय कविचंद । कथा मंडे बिसतारं ॥
एक समय बन षंड । सपतरिषि गये रमंते ॥
उमया शंकर तहां । देषि रसकेलि करंते ॥
लाजंत उअर मुनिवर फिरिय । श्राप दियौ सिव मन कुरषि ॥
ह्वजियौ संहित आवत इहां । मेंदी मोबिन अनि पुरष ॥ छं० ॥ ८६ ॥
मारतंड सुत मंड । जग्य मंडाय पुचकजि ॥
राजलोक परछन । देत आहुति सों कि दुज ॥
प्रगट कुंड कन्यका । देषि वाचिष्ठति वारं ॥
फेरि मंच तप जोर । करिय दसमन्न कुमारं ॥

* छं० ८३ मो. प्रति में नहीं है ।

षेलत सिकार इक दिवस वह। महादेव कौवन गयौ ॥
कहि चन्द आप मेटै कवन। पुरषा तन तें त्रिय भयौ ॥छं०॥८७॥
काम लुबद्धि बुद्धि। देषि त्रयि रुप छल्लि घर ॥
संभलि रिषि वाचिष्ट। बहुत करि अस्तुति शंकर ॥
प्रसंन होइ बर दियौ। पिता घर होय कुआंरं ॥
फिरि तिय की तिय होय। बुद्ध घर जाय जिवारं ॥
इक इक मास की अवधि करि। दुअसु पतंगा रष्षि इम॥छं०॥८८॥
बुध अंस चद्र बंसह भयौ। दस मन सूरज वंस क्रम।

रजपूत शब्द की उत्पत्ति।

दस हजार ग्रभवंत। रिषि त्रिय ढंकि धरची ॥
फरसराम कौ करत। वार इक वीर न षिची ॥
कासिप कौ ले दियौ। उदकि सारौ महि मंडल ॥
तपन तात पन छंडि। गयौ मन ग्रहै कमंडल ॥
वसुधा विचार तव कद्धि। निज रक्षा कारन थपिय ॥
उतपन्न सुतन तिन के सरज। दिष्षि नाम (१)रजपूज दिय॥
छं॥ ८९॥

रावल जी का कवि चन्द को दान देना ॥

मैदा मन पंचास। वीस मन वेसन दीनौ ॥
मंस जाति बहु भंति। जमुन तट भोजन कीनौ ॥
आटा घ्रत्त अप्पार। षंड गुर सक्कर भंती ॥
जै योषान जिहान। दई हथ्थनी इक तत्ती ॥
मनुहारि परग्गह सवन करि। भांति भांति आदर करिय ॥
पहुंचाइ समर रावर सुबर। अप्प घरघर विथ्थ,रिय ॥छं०॥९०॥
दो हथ्थिय तरिवार। तुरिय एराक अच्च गल ॥
कंचन जरित पलान। एक जोजन मभ्भ्फ पल ॥
हथ्थी संघल दीप। एक जमदट्ट अमोलं ॥
जर जर कसि सिर पाव। साज सात्कत्ति समोलं ॥

(१) ए.-को.-रजपूत।

पहुचाय चंद भट्टह सुबर। कीरति कलिजुग बिस्तरिय ॥
चिचकोट राव दीनौ इतौ। रही कलिज्जुग [1]वत्तरिय ॥छं०॥९१॥

बनवीर का कवि को एक हथनी और दो मुंदरी देना।

दूहा ॥ बनबीरह परिहार दिय। हथिनी एक सुरंग ॥
मोती माला संघन जल। द्वै मुंदरी सुचंग ॥ छं० ॥ ९२ ॥

रावलजी का शंक्रांति पर गुरुराम को एक गांव देना।

सूरजि भई संक्राति जब। प्रोहित दीनौ राम ॥
लष्षह्न न किसनारपन। दिय कारुंडौ ग्राम ॥ छं० ॥ ९३ ॥
गाथा॥ दिन प्रति दीजै दानं। सठंह्न नाय षरचयं कज्जं ॥
दोय पहर मिलि यट्टं। गह मई दरबार भट्ट चारनयं ॥
छं० ॥ ९४ ॥
इह रावर उनमानं। भानं उग्गाइ दिज्जियै दानं ॥
दिन प्रति दीजै धानं। इह दिट्टं न कथयं कब्बी ॥ छं० ॥ ९५ ॥
दूहा ॥ [2]भुंजाई रावर समर। आवै बरन अठार ॥
नह को पूछै अप्प पर। दिज्जै अन्न अपार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

रावलजी का इक्कीस दिन निगमबोध स्थान पर बास करना।

निगमबोध रिध बासकिय। रावर समर नरिंद ॥
हुए द्योस इकईस तहां। पंच सहस भर हंद ॥ छं० ॥ ९७ ॥

पृथा का महलों से रावलजी के डेरों पर आना।

दिवस चपथ्थै रौव रह। आवै प्रथा इकंत ॥
वासुर दोइ वासै रहै। परी भ्रान्त मन चिंति ॥छं० ॥ ९८ ॥
अति सुख सकुंल बरस तिय। रित रितिए आचार ॥
बिलसत दिन ग्रीषम अधर। सुपनौ राजन वार ॥ छं० ॥ ९९ ॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक सुंदरी को देखना।

कवित्त ॥ निसा एक माधव सु मास। ग्रीषम रिति आगम ॥
निसा जाम पच्छलौ। सुपन राजा [3]लहि जागम ॥

(१) ए. कृ. को.-विस्तरिय। (२) ए. कृ. को.-भोजाई। (३) ए. कृ. को-माहि।

सेत चीर छौनी । पवित्र आभ्रंन अलंकिय ॥
मुंकत बंध चाटंक । बंध बेनी अवलंकिय ।
निज बैरि धारि कज्जल नयन । हर हराह सहह करिय ॥
मानिक राइ वंसह विषम । रष्षि रष्षि धरनी धरिय ॥ छं० ॥ १०० ॥

राजा का पूछना कि तू क्या चाहती है। सुन्दरी का उत्तर देना कि "वीर पुरुष" ॥

साटक ॥ का तूं सुंदरि हुंधरा किमहिता इच्छा परा वांछिता ॥
को वांछा बर राज कोवर रुची दाताग्य रूपानिवा ॥
नं नं नं न्नप ज्ञान दानरुचयं रूपं न विद्यी त्रयं ॥
षड गंधार सुमार दुत्तर अरी सो मे वरं सुंदरं ॥ छं० ॥ १०१ ॥
दूहा ॥ इम वसुधा सुपनंत दिय । रजगति रजन विचार ॥
विलसत दिन ग्रीषम अरध । सुधपिय पंग कुआरि ॥ छं० ॥ १०२ ॥
रष्षि रष्षि उच्चार बर । गति सिंघल अतिरूप ॥
सुपनंतर चहुआन सों । चलन कहत इल भूप ॥ छं० ॥ १०३ ॥

उसी समय पृथ्वीराज की नींद खुलना और देखना कि प्रभात हो गया है।

धरकि चित्त जोगिनि न्नपति । दिषि प्रभात दुति गानं ॥
भान किरन दिसि दिसि फटी । तम घटि तमचर गान ॥
छं० ॥ १०४ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को स्वप्न का हाल सुनाना।

कवित्त ॥ जग्गि जलनि प्रथिराज । जग्गि संजोग सुपनि कहि ॥
सो सपनंतर जंपि । पत्ति दिट्ठी जु रत्ति महि ॥
सेत वस्त्र उत्तंग । चित्त हरनी कुटिला गति ॥
बैसम गुन गुर दुत्ति । दुत्ति उजलंत कुटीरति ॥
ऊंचै बचन्न बर कठिनइ । घन कुलटा गति चलन कहि ॥
सब भविस गत्ति न्निम्मान कहि । नन जानै भव गतिय बहि ॥
छं० ॥ १०५ ॥

(१) मो.-ढरिय ।

संयोगिता का उत्तर देना कि यह सब हुआ ही करता है।

सुनि सुकंत धरइंद । जोय दिष्षौ जुग्गिनि गति ॥
पुत्त मित्त दारा न बंध । रोकन पितुरनि पति ॥
दिष्टमान रोकै प्रमान । चष्षि अंछनि लष्षि कुछी[1] ॥
भोग बिना बंधि जगत । भम्मवय जग चय तुछी ॥
मायाति नट्ट संसारनिय । न्त्रिप नच्चवि मुक्के जगत ॥
जीवन्न प्रान प्रापति जबसु । तब लग इह भांवी बिगति ॥
छं० ॥ १०६ ॥

पुनः दंपति का केलिक्रीडा में प्रवृत्त होना।

मुरिल्ल ॥ हंसि आलिंगन दै चहुआनं । पिय मयूष दंपति रसपानं ॥
सुरत सुरत मंनं बर मत्तं । करहि सार संसार सुरत्तं ॥ छं० ॥ १०७ ॥

रसकेलि वर्णन।

हनुफाल ॥ बर सुरत रत्त सुचंद । दुहुं बढे आनंद कंद ॥
इह बुल्लि रसमुष बाल । बर कहत ओपम साल ॥ छं० ॥ १०८ ॥
ससिभोम कट्ठी रीस । मनु उदित भय ससि सीस ॥
मुषश्वेद विंद विराज । कविराज ओपम साज ॥ छं० ॥ १०९ ॥
कै किरन उलससि कुट्टि । कै ठौर मनमथ छुट्टि ॥
कसि कासमीर बिबंध । बर अग्र आठ सुचंद ॥ छं० ॥ ११० ॥
बर चिंत उपम बिसाल । उडि चलन मंगल बाल ॥
कुच अग्र स्रग मद विंद । रस बढे आनंद कंद ॥ छं० ॥ १११ ॥
[2]मुकि कमल वैससि बाल । अलि लै उडी जनु बाल ॥
कुच छुट्टि छुट्टि सुमग्ग । कुसमेष सीष बिलग्ग ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दुति होत कबिन झकोर । बग उड़ै घन जनु कोर ॥
प्रिय मेन नैन सुरत्त । तिन मझिक बाल सुगत्त ॥ छं० ॥ ११३ ॥
प्रति ब्यंब ओपम मीय । जनु सीय से हसि दीय ॥
रति निद्व रतिबर बीर । रति रयन रयन समीर ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-कुछ, तुछ ।
(२) ए कृ० को०—मुकि कमल बैस बिसाल

अरिल्ल ॥ अवसर प्रीति बढ़ी रसपानं। कहि वर दूत सुनी सुलतानं ॥
सुनि बर गोरिय साहि नरिंदं। भईय गत्ति ढिल्लिय छिन मंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

पृथ्वीराज की इस दशा का समाचार पाकर शहाबुद्दीन का अपने सरदारों से सलाह करना।

दूहा ॥ मति छीनी ढिल्लिय तनी। सुनिय साहि चहुआन॥
दाव न चुक्कै अप्पनौ। दुज्जन सौति उरगान॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ बोलि षान पुरसान। बोलि गोरि ततार बर ॥
षां रुस्तम षीरोज। सेन ढिल्ली चरिच वर।
बार बेर गहि मुक्कि। दीन में दीन कहायौ ॥
चहुआना जुरि नीर। मन्न मंती गह छायौ ॥
जौ होइ गोर गोरी यहां। तौ तोसल नन भग्गही ॥
चहुआन बंधे बंधन जुरां। सो दिन पंथ तु लग्गही ॥
॥ छं० ॥ ११७ ॥

यह सलाह पक्की होना कि दिल्ली को दूत भेजकर पूरा हाल जान लिया जाय तब चढाई की तैयारी की जाय।

सुमति सुरत्ती साहि। धाइ बंध्यौ चहुआनं ॥
सोई मता किज्जियै। बोल पंछै नत आनं ॥
सुभम निभम बीर। बोलि विभम परिवानं ॥
फेर मुकति सुलतान। जहां ढिल्ली परधानं ॥
तत मत्त बत्त बर संग्रहै। अरु हिरदै भेदै छिनह ॥
इन कहै साहि चतुरंग सजि। तब अरि ग्रहन विचार कह ॥
छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली को गुप्त चर भेजना।

तब सु साहि गज्जनै। दूत ढिल्लीय पठाए ॥

जु कछु तंत को मंत। [1]अंत कहि कहि समुझाए ॥
लै आवहु जंगल नरेस। षब्बरि सब सुद्धिय ॥
राज काज चहुआन। सकल सामंत सुबुद्धिय ॥
फुरमान साहि सिर धरि लियौ। भेष कियौ सोफी तिनह ॥
उभै पष्य क्रम पंथह चलै। कागर काइथ [2]कर दिनह ॥ छं०॥११९॥

दुत की व्याख्या।

दूहा ॥ साम दान अरु भेद दंड। ए च्यारौं बिधि आइ ॥
जान पनै सोइ दुतं कहि। काम करै सुषदाइ ॥ छं० ॥ १२० ॥

दूतों का दिल्ली पहुँच कर धर्मायन के द्वारा सब भेद लेना।

गाथा ॥ चर वर विवरितं सुद्धं। लिद्धं चहुआन राजधानीयं ॥
सह दूतं पंथानं। गोरीयं जथ्य जानामि ॥छं० ॥ १२१ ॥

बचनिका ॥ ध्रम्माइन कायथ पै षबरि पाए। तबहिं दुत गज्जन को आए ॥
तिहि दिन सुरतान आराम करि आनि षरे रहै। ततार षां सो बातैं कहै॥
बहुत रोज कहु और न आई। कछु दिल्ली की षबरि न पाई ॥
तब तत्तार षान कहत है। पातिसाह कछु बात षूब है ॥

बहुत दिनों तक दूतों के वापिस न आने पर शाह का चिंता करना।

मुरिल्ल ॥ चर चर चित्त चहुआनं। हाम बित्ति ढिल्लीय चहुआनं ॥
बुल्लि साहि ततार बुलाई। अजहूं दूत गज्जन न आई ॥
छं० ॥ १२२ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना कि दूत के लिये देर होना ही शुभसूचक है।

श्लोकं ॥ चिरं जोगीश सिद्धं। चिरं बंध प्रधानकं ॥
चिरं सेवक साधर्मं। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

(१) ए. कृ. को.—कंत। (२) ए. कृ. को-दिन करह।

चिरं तपो फलं दाता । चिरं राज फलं प्रभो ॥
चिरं नाम धनी दाता । चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ इन लच्छिन तसकर सुलभ । तस पर दूत वसीठ ॥
रति दृग हंदग कुसल भल । कर वंधेन घसीट ॥ छं० ॥१२५॥

नीति राव कुटवार का सब समाचार शाह को लिख भेजना।

नीति राव कुटवार दर । तहि निवसै उन रीति ॥
सुमिलि साहि कागद दियै । लिषि दरबारह नीति ॥छं०॥१२६॥

प्रथम दूत का दिल्ली का समाचार कहना।

ए गरुहां सुरतान सों । कहि षिन षान ततार ॥
प्रथम पहुर संभ्रम सुचर[1] । दर बोल्यो कुटवार ॥छं०॥ १२७ ॥

वचनिका ॥ प्रथम पहर बह्या, संभ्रम दूत आप षड़ा रह्या ।
सलाम लह्या, दिल्ली के चरित्र कह्या ॥
पातिसाह पहिलों सैं तान बड़े, राजा हुआ रति चढ़े ॥
छं० ॥ १२८ ॥

गाथा ॥ वैरी दं सुलतानं । दुसमन दैवान महलह थानं ॥
भर सहरत्त विरत्ता । आघातं गोरियं साहिं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

कवित्त ॥ एक समै हम्मीर राइ । दरबार सपन्नौ ॥
पिथ्थौरा चहुआन । हथ्थ संजोगि बिकन्नौ ॥
नथ्थि बाज गजराज । सुनर भेषह बर नारिय ॥
मार मार उच्चार । लहरि लक्करि सिर रारिय ॥
हाइ हाय दिसि सब्बें[2] हुअ । धुअ समान सुभ्भर धुरह ॥
हरि द्रुग्ग द्रुग्ग सुष उच्चरिय । जिन दरोग गंठे डरह ॥छं०॥१३० ॥

दूहा ॥ इह चरित्त पिष्षै सुचर[3] । लग्गे गज्जन राह ॥
नाम सुसंभ्रम सुभग ते । कही सहि सों जाह ॥ छं० ॥ १३१ ॥

(१) मो.-वर ।
(२) ए. कृ. को.-हुअ सब्ब । (३) ए. कृ. को.-दंषे बिचर ।

भर अबंध अछिय महल। रति बढ़ि घटि महिसार॥
विप्परीति दिल्लिय सहर। न्रपति अलुभ्यौ मार[1]॥ छं० ।१३२॥

दूसरे दूत का समाचार।

बचनिका॥ दूजा पहर वह्या। विश्रम दूत आय परा रह्या॥
सलाम लह्या। दिल्ली का चरित्र कह्या॥ ते कहा चरित्र॥

गाथा॥ भग्गीवा सुर संधी। बंधे पेमाइ लज्जलो पानां॥
अप्पा पर न गंनिज्जै। जानिज्जै राज भंजाई[2]॥
॥ छं० ॥ १३३॥

कवित्त॥ जां निज्जै सुविहान। राज भज्जै राजानौं॥
दर है गै भर नथ्थ। तेज भग्गौ चहुआनी॥
वासर संधि विसंधि। नीति भग्गी ढिल्ली वै॥
जानिज्जै सु बिहान। होइ हिंदवान सुहै वै॥
लज भगौ प्रेम बढ्ढ बरह। दइ दुज्जन महलैं ग्रसै॥
चहुआन चरन सेवन सुबर। नीति राव अप्पन बसै॥
छं० ॥ १३४॥

तीसरे दूत का समाचार।

बचनिका॥ तीजा पहर वह्या। निश्रम दूत आय परा रह्या॥
सल्लाम लह्या॥ दिल्ली का चरित्र कह्या। ते केहा चरित्र॥

गाथा॥ हिन्दू सयन सुदुष्षं। सुष्षं सांहाबं गोरियं साहिं॥
राजन विषम चरित्रं। सामंता रोजनं रोज॥
छं० ॥ १३५॥

कवित्त॥ रोज रोज सु बिहान। घेर सामंत ग्रेह घन।
सामि बिंद उच्चरै। सामि निन्दा न सुनै कन॥
भर अरत्त साईं। विरत्त गोरी सुलतानं॥
संझ रूप रंजोगि। गिलयौ चहुआन सुभानं॥
विपरीति बत्त ढिल्लिय सहर। राज नीति भग्गी रसं॥

(१) मो.-उलझ्यौ नार। (२) ए. कृ. को. भज्जाई।

पंजाब पंच पंचै सुपथ। चिंति तप्प गोरी बसं॥
छं०॥ १३६॥

चौथे दूत का समाचार।

बचनिका॥ चौथा पहर बह्या। विलास दूत आइ षरा रह्या॥
सलाम कह्या। ढिल्ली का चरिच कह्या॥ ते केहा चरिच॥
गाथा॥ गाडंडूर उडंडा। जोरु गरुवार मरद हरु अंदा॥
धुनि धुनि सह सामंता। चावंड बेरियं बधे॥ छं० ॥१३७॥
दूहा॥ चिया राज बसिवौ नही। बसिवौ नह बहुराज॥
बालराज बसिवौ नही। कहै घर घघर आज॥ छं॥ १३८॥
कवित्त॥ जिन कंधै ढिल्ली नरेस। कंध जिनके ढिल्लिय पुर॥
जिन कंधै लगि राज। अग्ग अब्बुझ बहुन धर॥
मान तुंग बर अग्ग। भिरिग कनवज्ज जुझार॥
चौंसट्टिन मुक्कि कै। भागि जोगिनि पुर आए॥
चहुआन सुबर जानै न्नपति। सो बल भग्गौ साहि सुनि॥
चादर सु अप्पि गोरी सुबर। पंच देस पंजाब धुनि॥छं०॥ १३९॥

शाह का पीर को चादर चढाकर दुआ मांगना।

बचनिका॥ जमा सुविहानं। शाहब दी सुलतान॥
पैगंबर परवर दिगार। इलाह करीम कवार॥
सुलतान जलाल सिकंदर जाया। सुलतान साहिबदीन अलह उपाया॥
मुसलमान महति। दीन भीमहति॥
इतनी कही कहन लागे। पातिसाह साहाबदीन आगे॥
अपर पराये टरे। सैतान परवरे॥
सानंत मन जरे। चावंड राइ भी वेरी यौं भरै॥
कूरंम कुल संकोड़ा। परिगह पास छोड़ा॥
गांमार परि गनाई। हाहुलि परिहांम जनाई॥
राउ जैतसी पास भेहरा छुट्टा। पुंडीरों लाहौर लुट्टा॥
राउ भोंहा दुनिया मुक्की। राउ माल दे मौत चुकी॥

देव राव दीवान छंडया। जादवौं वैर मंडया ॥
षलक आलम आलोई। जीवतै चहुआन वोई ॥
दसौंही दीसा जीती। कनवज्जैं कहर वीती ॥
हजरत षुदाइ षेल। असि मरदांन मेल ॥
बरन बरन घेरी। बद्दलौं पंति नेरी ॥
धु आसाहि साहाब साहि। दिजियै चादर उचाय ॥

शहाबुद्दीन का चढ़ाई के लिये देश देश को परवाने या पत्र भेजना।

दूहा ॥ चर चर बत्तति सिद्ध किय। झुकि किय घांव निसान ॥
सत्त सहस कग्गर फटे। देस देस सुरतान ॥ छं० ॥ १४० ॥
वचनिका॥इतने मुलकन कौं फुरमान फाट्टे। नीवी मदा ठौर ठौर बैठक ठट्टे
फुरमान पेस कदलिवास। कैलास देस रोह षंधार ॥
गष्षर गिरवान षुरासान मुलतान। भटनैर भष्षरवान ॥

शहाबुद्दीन के चढ़ाई करने का समांचार दिल्ली में पहुंचना और प्रजा बर्ग का अत्यंत व्याकुल होना।

दुहा ॥ फुट्टिय वत्त प्रचार चर। घर घर ढिल्लिय थान ॥
चढ्यौ साहि चहुआन पर। चढ़ि हय गय असमान ॥छं०॥१४१॥
वढि आवत ढिल्ली सहर। चढ्यौ साहि सुरतान ॥
घर अंगन मंगल हरिग। सुनत सूर अकुलान ॥ छं० ॥ १४२ ॥
ग्रह बंभन ग्रहवान नर। ग्रह छची छह हन्न ॥
भई बाति नर नारि मुष। सब लग्गै सन सन्न ॥ छं० ॥ १४३ ॥
कवित्त ॥ सुक्रम साहि बानौत। आय गज्जन संपत्ते ॥
तिन कग्गर हयवार। आइ उत्ते इत तत्ते ॥
सेत दुती रविवार। बार गुरु तेरह तत्ते।
चढ्यौ साहि साहाब। जोध है गै सनि मत्ते ॥
जिन करहु ग्रब्ब गोरी सुपहु। जानि पुरानौ सेन सह ॥
सज्जयौं सूर साहाब पुर। आयौ आतुर उप्परह ॥ छं० ॥ १४४ ॥

मुरिल्ल ॥ सुनि कग्गर दुज्जर दिल्ली धर । भूमि कंप जिम कंप नर व्वर' ॥
बाल वृद्ध नर नारि समानह । लगी धक्कधकी चिंत चिंतानह ॥
छं० ॥ १४५ ॥

प्रजा के महाजनों का मिलकर नगर सेठ के यहां जाना ।

भै लग्गी दिल्लिय पुर जामह । नगर सेठ पंहिंगय प्रजतामह ॥
मिलिय सकल एकंत महाजन । किम बुझ्झैं रतिवंती राजन ॥
॥ छं० ॥ १४६ ॥

नगरसेठ श्रीमंत के यहां जुडने वाले सब महाजनों के नाम ग्राम और उनकी धन पात्रता वर्णन ।

पद्धरी ॥ प्रज मिलिय ताम विचार कीन । बुल्लाय बुद्धि'जन सेठ लीन ॥
श्रीवंत साह सब नयर सेठ । मति वंत बुद्धि गुर गुन निदेठि ॥
छं० ॥ १४७ ॥
बर सिंह साह हंकारि अप्प । भोगवै विभौ लच्छी सु तप्प ॥
श्रीधर सुनाम सुंदरह दास । श्री करन जसोधर संक्क तास ॥
॥ छं० ॥ १४८ ॥
सोमन्न साहि केलन्न साहि । धन सागर आगर सगर ताह ॥
सोवन्न साह साजन्न बोलि । गरुअत्त गाज सुभ तेज तोलि ॥
॥ छं० ॥ १४९ ॥
अमरसी अगर ईसरह दास । करमसी उदैसिंघ राम आस ॥
केसर कपूर षेतसी नाम' । गैंनपति गनेस गौरसी स्याम ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥
घड़सीह धनू नेतसी साह । चेतन्न चतुरभुज मिले माह ॥
छाजू अरु छीतर छविल आइ । जोधा जैसिंघ झांझन बुलाइ ॥
॥ छं० ॥ १५१ ॥
टोडर मल टी लाठ कुरसीह । चलि गए सांप डरपंत लीह ॥
डुंगर सी ढाला तुरत बेग । व्यापार धरम चालै सुनेग ॥
॥ छं० ॥ १५२ ॥

(१) मो.—नरव्वर ।

थानि गथ्थिरा दामा दयाल। धनराज धींग भोगी भुआल ॥
परवत्त पदारथ पदमसींह। फांदूरु फलाबर सिंघ ईस ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥
भांमो अरु भोजो मेघराज। मोहन मयूरो जा बड़ बिराज ॥
रनधीर लषमसी बीर दास। सेषो सिंघौ हेमंग हास ॥
॥ छं० ॥ १५४ ॥
आये अनेक महाजन्न सब्ब। संकरहदास पचौ सुग्रब्ब ॥
बहु ध्रम्म धरनं अति तप्पतार। अति उंच उंच क्रति क्रम्मकार ॥
छं० ॥ १५५ ॥
नन लहैं घाम छाया प्रचार। कोमलह गात लच्छी न पार ॥
बोलंत सास चालंत थूल। अति बध्धौ उदर चढि ग्रीव मूल ॥
छं० ॥ १५६ ॥
पहिरंत वस्त्र ढीले सु उंच। ग्रिह-दै कपाट मुररंत मुंछ ॥
लेषिनी कान लेषौ करंत। हरि ब्रह्म रूप ताहू छरंत ॥छं०॥१५७॥
ग्राहंत कोप भीरंत मुट्ट। पीसंत दसन उट्टंत निट्ट ॥
दाता दयाल ऐसो न और। बरजंत पाप क्रम ठौर ठौर ॥
छं० ॥ १५८ ॥
प्रब दांन ग्यान तीरथ विनान। सोभंत साह दै अन्न पान ॥
सोभंत नगर जिहि बड़े साहि। लष कोट द्रव्य जिन हट्ट माह ॥
छं० ॥ १५९ ॥
ए मिले साह श्रीवंत ग्रेह। आये सु चिंतातुर चिंति तेह ॥
सुत सुतिय क्रम्म परिवार व्रिद्ध। घरबार भरे भंडार निद्धि ॥
छं० ॥ १६० ॥
कोटीस धुज्ज बंदहि अनेक। बर धवल ताम मंडो विवेक ॥
उंच उंच भोमि साजै विलास। बर गौष अनत लग भाल भास ॥
छं० ॥१६१ ॥
प्रज्जंक विवध साजे अनूप। बासंसि विवह गुन गंठि भूप ॥
आए सुसब्ब ग्रह नयर साह। आसन्न दिड्ड सम मन्नि ठाह ॥
छं० ॥ १६२ ॥

श्रीमंत साह का सब सेठ महाजनों का आदर सत्कार करना और सब महाजनों का अपनी विपति कथा सुनाना।

दूहा ॥ मानि साह श्रीवंत घन। सब प्रति आदर दीन ॥
अप्पनाम गुन उद्धरिय। सब संबोधन कीन ॥ छं० ॥ १६३ ॥
प्रथुक संबोधित साहि सब। चंदन चरचि कुसम्म ॥
कस्तूरी करपूर युत। बीर सुगंध सुरम्म ॥ छं० ॥ १६४ ॥
आदर करि सब प्रंज पसरि। दिय बैठन सुभ ठाह ॥
मति प्रमान जिहि पुच्छियै[1] बोलि सुगुझ्झ गुराह ॥ छं० ॥ १६५ ॥

कवित्त ॥ मंच बयट्ठे साहि। जिके बहु गुन आगर ॥
सुष सरूप भोग बन। सजल लच्छी बुधि सागर ॥
सुतन मंत चिंतवै। चित चिंतै न कोइ नर ॥
रतिमत्तौ राजान को। सुगुदरै दुष अन्दर ॥
सामंत सब्ब अच्छै विरत। राचा वंड बेरिय भर्यौ ॥
कैमास स्वग्ग[1] जातह सकल। सुवर मत्त[2] सथ्यह सह्यौ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

यामारी पर चित्त। विरत किन्नौ चहुआनह ॥
जो बुझ्झै सम विषम। ग्यान अप्पनौ परानह ॥
मधू साह परधान। सोय दरबार न दिष्षहि ॥
रयन कुमर सामंत। सोंह सोइ पित न परष्षहि ॥
अनि तरुनि नेह छंड्यौ तमकि। कोइ न सुधि न्रप वर कहै ॥
संजोगि नेह रत्तौ नपति। मनमत्तौ निस दिन रहै ॥
छं० ॥ १६७ ॥

पुचिय रा कमधज्ज। सोइ जुब्बन गुन मत्ती ॥
रूप द्रव्य सिंगार। नेह उर चौजन रत्ती ॥
नह बुझ्झै पर अप्प। तैन रस राजन बंध्यौ ॥

(१) ए. को.-सुर्ग (२) ए. कृ. को.- तत्त

जिम अलियज अंबुजहि । गई बासुर निसि संध्यौ ॥
चिचंग राह आयौ सु घर । भये बीस बासुर सुथह ॥
नन भई बुझ्झि राजन किनो । तौ को गुदरै अप्प कह ॥
छं० ॥ १६८ ॥

श्रीपति साह का सब साहुकारों को लिवाकर गुरुराम के घर जाना।

भुजंगी ॥ तबै उच्चर्‍यौ साह श्रीपत्ति तामं । सबै मंच मंडौ जुषंडौ विरामं ॥
भए सब्ब साम्मंत चित्तं विरत्तं । दरं तेन तज्यौ न्त्रिपं मन्नि मत्तं[1] ॥
छं० ॥ १६९ ॥

पुरष्पं[2] दरब्बार पावै न जानं । रहैं चीय रुक्कै पुरुष्पं पुरानं ॥
विरानंनं[3] अप्पंन बुझ्झै न सायं । करं बेत लट्ठी तरस्सीत रायं ॥
छं० ॥ १७० ॥

न्त्रिपं रस्स बंधे सुपंगांनि तासं । भए तीस अग्गं बरं पंच मासं ॥
निसा बासुरं संधि भूल्यौ नियानं । लगे मीनकेतं क्रतं पंच बानं ॥
छं० ॥ १७१ ॥

कहै कोय राजंग सुझ्झै न अप्पं । ग्रिहं राज चल्यौ गुरं राजबिप्पं ॥
लहै भंति एकंत कुम्मार थानं । बिना सेव देवन्न आहार पानं ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पुछै बैरि बर बीर चामंड धारं । करै कानि भानेज रेनं कुमारं ॥
घरं घालि बरदाय सूतो सुअप्पं । करै कित्ति आनूप प्रागट्ट तप्पं ॥
छं० ॥ १७३ ॥

कहै गुद्दरं अन्य सूझै न राजं । बिना राम देवं जिनं दिल्लि लाजं[4] ॥
मतों मंडि उट्ठै सबै साहि तामं । चली प्रज्ज सथ्थैं ग्रिहं विप्प रामं ॥
छं० ॥ १७४ ॥

(१) ए. कृ. को. मत्त (२) ए.-गुरषं
(३) मो.-विरामन्ना (४) ए. कृ. को.-काजं

चढ़ै जान एकं सुएकं अनोपं। नरं जान जानं चवं डोल जोपं॥
बहिल्लं सु अस्वं सजुत्ते बनेयं। केयं अश्व रोहै सुषं राह रेयं॥
छं०॥ १७५॥
बसनं अनूपं जराबं सुधारें। मनों ध्रंम रूपं धरत्त्रीव तारै॥
चली प्रज्ज सथ्यंग हंकार सद्दं। गए विप्र गेहं गहं माह नद्दं॥
छं०॥ १७६॥

गुरु राम का सब सेठ साहूकारों से सादर मिलना।

दूहा॥ सुने गहं मह विप्र दर। आयौ उट्टे ताह॥
तब दर पति सनमुष कहिय। आये श्रीपति साह॥ छं०॥ १७७॥
प्रजा पलक सथ उम्महौ। जे बड़ दिल्ली साहँ॥
सो आये दरबार तुम। कोइ इक काज उगाह॥छं०॥ १७८॥
आए आतुर राज गुर। करिय विवह मह्मान॥
आदर करि आसन्न दिय। संबोधें बर बानि॥ छं०॥ १७९॥

श्रीमंत सेठ का गुरु राम से शाह की चढ़ाई का समाचार कह कर सारा दुःख रोना।

कवित्त। सुनि अवाज सुरतान। पलक भज्जिय नद मंडल॥
कर कुसाव भेहरा। दान अरु मान अषंडल॥
मिलि परवान पुंडीर। सहर लुथ्थौ द्रब साइय॥
हनि सोदागिरि बानि। बनिज उन्नित पट पाइय॥
अग्यान लुपै अग्या न्रपति। सत संपति संभर धनी॥
गुर राज काज अवसर अवसि। प्रज पुकार मंडिय घनी॥
छं०॥ १८०॥

दूहा॥ तुम सम राजन राज हित। बित रष्षन चित भ्रम्म॥
कानन मंडै करन सों। तू धर रष्षन ध्रम्म॥ छं०॥ १८१॥
कवित्त॥ मंद राज माल दे। देष चिय तन असि किन भौ॥
लोहानौ आजानबाह। अजमेर द्रुग्ग गौ॥
पावस रा पट्टनी। महि महि सार निरत्तौ[1]॥

(१) ए.-नारंनौ, नारतौ

जर जोवन तन मंद। तुंग तेजी रन असुभौ॥
दाहिम्म दोह बंछै विषम। चरन बीर बेरी बहन॥
घर घालि भट्ट सूतौ घरह। सुबर विप्र तोही कहन॥
छं० ॥ १८२॥

का कलहंतरि मारि। धारि आनी घर मभ्झै॥
रवि सुंमान प्रथिराज। गिल्यौ गोरी जिम संझै॥
जिहि परिगह परिवार। मारि भारत उप्पारिय॥
जिम रावन मंडलिय। बलिय बन्दर हरि बारिय॥
इच्छहु जो विप्र पच्छहि मरन। तौं अग्गै सोइ कहौ॥
कर दरभ कमंडल छाग स्रग। बादरि द्रुग मारग गहौ॥
छं० ॥ १८३॥

पाहुंनौ रावर नरिंद। बर प्रथा सपत्तौ॥
सोइ अचिज्ज गरुहां। सुनंत मन संभ्रह संतौ॥
ता सज्जन दी लज्ज। बज्र गोरी धर चंपिय॥
नद नाहर पट्टन। प्रवेस अवनी आकंपिय॥
इम सुषम निंद आवै न्रपति। विषम अप्प डंकह डसिय॥
गुर राज काज अवसर वसिय। किम सुनेह छंडै रसिय॥
छं० ॥ १८४॥

राजहीं कूरम्म। हथ्थ लड्डू बिय बंधे॥
चौहुआन सुरतान। कूर काबरि इक्क बंधे॥
देव राज षीची प्रसंग। गंग टट्टं पट फुट्टिय॥
जैत राव हय गय। भंडार साहन सह लुट्टिय॥
गुज्जर गमार सरुचह वली। मंत दैव द्रुग्गन गनै॥
बर विप्र राज राजंग गुर। कहै आज तोही वनै॥ छं० ॥ १८५॥

गुरु राम का कहना कि मैं तो ब्राह्मण हूं पोथी पाठ जानता हूं राज काज की बातें क्या जानू।

प्रोहित वाक्य।

हम सु कज्ज प्रब पंच। पढ़ै पचा प्रभु रंजहि॥

हम जु लच्छि आस रहि। चरन चंदन घसि बंदहि॥
हम सुदेव जग्योपवीत। सोहै तन मंडन॥
हम विरद बंदि न पढ़त। पापह पर षंडन॥
इहं विकट भट्ट चंदहि चरित। कहै सुमानै न्रप नवल॥
परतष्षि द्रुग्ग पुच्छन चलौ। मंच घत्त सत्रह सवल॥
छं०॥ १८६॥

शाह का कहना कि राज गुरु होकर अब आप भी ऐसा कहते हैं तो हम किसके होकर रहें।

प्रजा वाक्य।

धर बाहर पंडवन बुद्धि। बंधवन रुधि छुट्टियं॥
धर बाहर वामंन। छलित्त बल दोष सुथट्टिय॥
धर बाहर जुरि जरासिंध। गुर गजा जुद्ध किय॥
धर बाहर सुर पत्ति। अस्ति दद्धीच मंगि लिय॥
जिहि जियत धरनि धर और प्रभु। तिहि जननी जुब्बन हरिय॥
बंभन सुकज्ज इह अज्ज तुम। प्रज पुक्कार मंडी करिय॥
छं०॥ १८७॥

गुरु राम का श्रीपत साह और सब महाजनों सहित कविचन्द के घर जाना।

दूहा॥ प्रज्ज सु करिवर विप्र कज। सीस तिलक तन तुंग॥
कुसुम गंध सव सथ्य मिलि। मनहु कमल रस भ्रंग॥
छं०॥ १८८॥

जब सहाव चद्दर उठी। तब गलहां फुटि चाय॥
प्रज पुकार गुर सों कहिय। चंद कहन गुर आय॥ छं०॥ १८९॥

कबित्त। राज गुरू दरबार जाय। घर चंद सपत्तौ॥
छच चौडोल रु जान। दिव्य[1] आसन दीपत्तौ॥
हेमहार मुद्रित उ चंद। किरनिय जगमग्गिय॥

(१) ए. कृ. को.-दिष्य।

तिमिर पाप कट्टन। लिलाट प्राची दिसि उग्गिय॥
प्रज सोर रोर पावस मनों। सुगर भट्ट चंदह सुनिय॥
भट्टनि जगाय जग्यौ पुरस। सुगुर पच्छ सुदह दुनिय॥
॥ छं०॥ १९०॥

कवि का स्त्री बालकों सहित गुरु राम की पूजा करना और गुरुराम का कवि से अपने आने का कारण कहना।

चंद बदनि अंगि चंद। चंद बदनी मुख चाह्यौ॥
है चंद्राननि चंद्र। कंत चंदहिं न सुहायौ॥
अम्रित मित्त कलमित। नित्त बंदिन इह बंदिय॥
छिन छिन घटि बढि बढै। राह भय भवन सुजंदिय॥
दुज पुज्जि अज्ज लज्जा न करि। राज गुरू आयौ घरां॥
साषंग धूप दीपह चरचि। सुबर बिप्र मंडल बरां॥
॥ छं०॥ १९१॥

मुरिल्ल॥ सकल लोइ पुच्छन गुरु अष्षहि। गुरु षट मास राज बिन दिष्षहि॥
तब परं जानि प्रपंच उपायौ। तब गुरु पुच्छन चंदहि आयौ॥
॥ छं०॥ १९२॥

दूहा॥ आदर चंद अनंत किय। ग्रह आवत गुरु राम[1]॥
सम सुत चियनि सु चरन परि। सिर फेरिग सब हाम[2]॥
॥ छं०॥ १९३॥

मुरिल्ल॥ तब गुरराज राज कबि बुझ्झै।
तुहि बरदाइ तीन पुर सुझ्झै॥
अहि निसि देव सेव गुरु ठानिय।
सो षट मास मिले बिन जानिय॥
छं०॥ १९४॥

(१) ए. कृ. को.-राज। (२) ए. कृ. कों.-साज।

कवि का कहना कि जिस स्त्री के कारण सर्वनाश हुआ राजा उसी के प्रेम में लिप्त है।

दूहा ॥ हस्यौ चंद बर बिप्र सों। तुम जानहु बहु भंति ॥
जिहि कामिनि कलहौ कियौ। सो जामिनि बिलसंत ॥
॥ छं०॥ १९५ ॥

गुरुराम का कहना कि पृथ्वीराज ऐसा उदंड पुरुष क्योंकर स्त्री के बश में है।

मुरिल्ल ॥ कही चंद बर बिप्र न[1] मानिय।
रहि रहि कबि तैं बात न जानिय॥
जिहि धनु चिय रन चिन वर आनिय।
सुक्यौं देव चिय बसि करि मानिय॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवि का कहना कि अभी आप वह बात नहीं जानते ।

तुम सम दिष्टि अदिष्ठि न दिष्यौ। जब असीलष्य दल्ल गहि[2] भष्यौ ॥
प्रान समान परत दप छोद्यौ। मरन छंडि महिला सुष[3] मोह्यौ ॥
॥ छं० ॥ १९७ ॥
तिहि महिला महिला बिसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साई ॥
बिभौ भूमि भ्रित जाहु सुजाही। सुनि सौ समौ राज गुर नाहीं ॥
॥ छं०॥ १९८ ॥

गुरुराम का कहना कि हां कवि कहो क्या बात है।

दूहा ॥ समौ[4] जानि गुर राज रहि। कहि कहि कबि इह बत्त ॥
किहिवै किहि रूपनि रवनि। किम राजन रस रत्त ॥ छं० ॥ १९९ ॥

कविचन्द का संयोगिता के रूप राशि का वर्णन करना।

जुब्बन ज्यौं तन मंडनौ। सिसु मंडन तन डोल ॥

---

(१) मो.-सु। (२) ए. कृ. को.-गहि गहि।
(३) ए. कृ. को.-मन। (४) ए.-मनौ।

बालप्पन सह बिच्छुरन। तिहि चित चंचल लोल॥
॥ छं० ॥ २००॥

गाथा ॥ जंजोई संजोई। जोईतं सिद्ध जम्माई॥
नंजोई संजोई। गोईतं सिद्ध जम्माई॥ छं० ॥ २०१ ॥

मालती ॥ गुरु पंच सत्तति चामरे। चहुआन अच्छर धामरे॥
सति यौय पिंगल बंधए। गिय मालती प्रति छंदए॥
॥ छं०॥ २०२ ॥

संजोगि जोबन जंबनं। सुनि सर्वदा गुरु राजनं।
नग हेम हंस जुथप्पनं। गै मग्ग हंस उथप्पनं॥
॥ छं० ॥ २०३ ॥

तल चरन अरुनति अड्डयं। जनु ओय ओघंड लड्डयं॥
नष कुंद मल्लि सुवेसनं। प्रति व्यंब ओन सुदेसनं॥
॥ छं० ॥ २०४ ॥

करि कासमीर सुरंगनं। विपरीत रंभति जंघनं॥
रस नेव रंजि नितंबिनी। कुसुमेष द्रक्ष बिलंबिनी॥
छं० ॥ २०५ ॥

उर भार मध्य विभंगन[1]। दिय रोम राय सुथंभनं॥
कुच कंज परसन जंअली। मुष मयुष[2] देषि[3] कलंकली॥
छं० ॥ २०६ ॥

हियं[4] अयन सयनति सिद्धयौ। भजि ग्रहन ग्रहनति रिद्धयौ॥
उर भीन भीलति कंचुकी। भुजं ओट जोटति पंचकी॥
छं० ॥ २०७ ॥

नलि नील पाणि वअचछयौ। जनु कुंद कुंदन सुच्छयौ[5]॥
कल ग्रीव रेह चिवल्लया। जनु पंच जन्य सुयल्लया॥ छं० ॥२०८॥

अधरेव पाक सुबिंबनं। सुक सालि आलिन खंडनं॥
दस नेव मुक्ति सनंदनं। प्रति भास मुद्रित बंदनं॥
छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए. कृ. को.- विभंगनं (२) को.-नयुष (३) मो.-दोष
(४) ए.-हिय (५) ए.-चच्छयौ

मधु मधुरया मधु सद्दया। कलयंत कोकिल बद्दया ॥
भ्रम भवन जीवन नासिका। नसु अंजनी पिय चासिका ॥
छं० ॥ २१० ॥
झलं मलत श्रवन तटंकता। रथ भंग अरक विलंबता ॥
तुछ तुच्छ इच्छहि इच्छसी। षष लज्ज संसद्ध संकसी ॥
छं० ॥ २११ ॥
सित असित उररि अपिंगज्यौ। जनु सेड बंदर बच्छज्यौ ॥
तसु मद्धि म्रग्ग मद बिंदुजा। दुति इंदुनिंदत सिंधुजा ॥
छं० ॥ २१२ ॥
कच वक्र चक्रति कुंतलं। तसु ओपमा नह भूतलं ॥
मनि बंध पुहपति दीसए। जनु कन्ह कालिय सीसए ॥
छं० ॥ २१३ ॥
चिस रावली वनि बंनियं। अवलंबि अलि कुल स्रिनियं ॥
चित चिच चिचत अंबरं। रति जानि द्रुद्धति सम्भरं ॥
छं० ॥ २१४ ॥
जनु सीस फूलति अच्छयौ। मनु कन्ह कालिय सुच्छयौ ॥
* * * * * * * छं० ॥ २१५ ॥

संयोगिता के शरीर में १४ रत्नों की उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ जिहि उदद्धि मथ्थ ए। रतन चौदह उद्धारे ॥
सोइ रतन संजोग[1]। अंग अंगह प्रति पारे
रूप रंभ गुन लच्छि। बचन अम्रत बिष लज्जिय ॥
परिमल सुरतरु अंग। संष ग्रीवा सुभ सज्जिय ॥
बदन चंद चंचल तुरंग। गय सुगति जुव्वन सुरा ॥
धेनह सुधनंतरिसील मनि। भोंह धनुष सज्जों नरा ॥
छं० ॥ २१६ ॥
दूहा ॥ समर समंडन समर ग्रह। समर सुरप्पर भोग ॥
समर सुजित्तिय पंग न्रप। तिहि[2] चह्नन संजोग ॥
छं० ॥ २१७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सोइ सनोग सुअंग (२) ए. कृ. को.-वछह।

मन्त्रि राज गुर राज रस। कवि वर वरनिय सत्ति ॥
जस भावौ तस भुग्गवै। तस विधि अप्पै मत्ति ॥
छं० ॥ २१८ ॥

उभै उभै रस उप्पयौ। मिले चंद गुर राज ॥
कब वयनन आनन मिलहि। नयन निरष्षहि राज ॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द और गुरु राम का सब महाजन मंडली सहित राजद्वार पर जाना।

भुजंगी॥ मिले विप्र भट्ट अनूपंम धामं। मनोहिंदवानं सबानं[1] तकामं ॥
उभै सूर सांई स अग्या विनानं। चढ़े एक चोडोल नर एक जानं ॥
छं० ॥ २२० ॥

महा प्रीति अंगं मनं एक कीनं। मिले हथ्थ हथ्थं सुताली य दीनं ॥
उभै ओपमा सूर चंद स चंदं। उभै पूजनं राज राजंन बंदं ॥
छं० ॥ २२१ ॥

अनेकं सु भंती उभै जानि बानं। उभै भ्रम्म कित्ती रथं चाहुआनं ॥
उभै आस पासं महाजन्न चालैं। जिनं देख देसं महानीच हालैं ॥
छं० ॥ २२२ ॥

कहै जे समाचार दूरंम होता। मिलै लोक सथ्थें तमासा निजोता ॥
* * * * * * * छं० ॥ २२३ ॥

कवित्त ॥ एक रथ्य आरुहिय। सरद दिन इंद मनोहर ॥
समुह राज दरबार। पलक उम्महिय सगोहर ॥
कलस बंधि बंधियन। सगुन संचारि विचारिय ॥
बढ़े कित्ति वल्ली[2] सुघट्टि। घट आउदि हारिय[3] ॥
उच्छह उतंग छंदह बयन। गयन गज्जि बज्जिय जलह ॥
दरबार राज धुंधरि धरनि। सरन रष्षि दुग्गा बलह ॥
छं० ॥ २२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सबानंन
(२) मो.-वेली
(३) मो.-भट आय निहारिय

संयोगिता की ओर से नरभेष धारण किए हुए पहरे-दार स्त्रियों का सब लोगों को मार कर भगा देना।

दिष्षि दइय दरबार। पंग कुंअरि चर बारहि॥
नारि भेष नर वस्त्र। सस्त्र लकरी कर झारहि॥
मार मार उच्चार। बाल तरुनि सुगंध रस॥
तुरिय नथ्यि गज नथ्यि। नथ्यि रथ विरद बंदि जस॥
बाजहि विसाल रन तूर रव। भवर भीर भामिनि भवन॥
दिठि परत लरथ्थर पय परत[1]। नकरि जीव अग्गह गवन॥

छं०॥ २२५॥

पलक भग्गि गय सथ्थ। छंडि चौडोल लोग गय॥
लाल लहरि लक्करिय। छाह सिर विप्र भट्ट भय॥
बिन अलच्छि लच्छि नइ। विहनि इच्छा भइ सुगंह॥
उम्माह ग्राह मिल्लिग[2] पवारे[3]। रवरि राह ठिल्लित ठिलिग॥
दासी दिवंग सम अच्छरिय। मिलित दरह दोउनि बुलिग॥

छं०॥ २२६॥

कविचन्द का ड्योढीवाली दासियों से बातें करना और कंचुकी का कलरव सुनकर कवि के पास आना।

चंद्रायना॥ मिले चंद गुरराज विराजत राज दर।
जहां पंगा प्रभानु कियो प्रथिराज बर॥
तहां अपुब्ब रस रास विलासति सुंदरिय।
छित बिन न्रप दरबार जिनग बिन सुंदरिय॥

छं०॥ २२७॥

दूहा॥ इम जंपै कविराज गुर। कंपिग पट्टन वार॥
कौ गुर देव नरेस सौं। दिसि मज्झनी पुकार॥

छं०॥ २२८॥

(१) ए. कृ. को.-दिटि परतल रष्षर पय परत। (२) ए. कृ. को.-पिल्लिग
(३) मो-दवरि, ए षवरि

सुनि सुनाइ आवंन मिटि। दिष्षि कविंद न्रप थान ॥
जै जीवन तौ पंच बुलि। दर बोले दरवान ॥

छं० ॥ २२९ ॥

बर किंचिक पुछ्छह न्रपति। सुनि कलरव कवि वानि ॥
धाय चंद दंरसन कियौ। भ्रम्म परिग्गह ठानि ॥

छं० ॥ २३० ॥

सुनि कबि बानि प्रमान धन। कहि इंछनी सें आइ ॥
जु कछु कहौ बरदाय बर। ज्यों हित दिसा पसाइ[1] ॥

छं० ॥ २३१ ॥

अन्दर से इस दासियों का आकर कबिचन्द से कहना कि क्या आज्ञा है सो कहिए हम राजा से निवेदन करें।

चद्रायना ॥ तब कुटिल भौंह चख सोहति मोहति दासि दस।
कछुक हंसिय[2] पय लग्गिय जंपी अलीय[3] लसि ॥
तुम सरवग्य सुकब्बि राज गुर राज सम।
तुम तन समुह निरष्षि गये पति पाय हम ॥ छं० ॥ २३२ ॥

दोहा ॥ आसन असु. दिय चरन रज। कच झारिय तन रेन ॥
सब्ब सिंगार सु सुंदरिय। आदर आभर नेंन ॥

॥ छं० ॥ २३३ ॥

दिट्टौ सो दिट्टौ नहीं। अनदिट्टौ दिट्ठाय ॥
तुम सरवंगिय कबि सुनिय। इह अचिज्ज किहि भाय ॥

छं० ॥ २३४ ॥

कवि अचिज्ज सब अप्प घर। तरह तरह बतिनाइ ॥
नैप्रिय धुन तिन नाव दस। किंह भूत गीताय ॥ छं० ॥ २३५ ॥
आदर दर दिन्नौ कविहि। आयस मंग्यो दासि ॥
कहा पयंपहु न्रपति सों। कहौ चंद गुर भासि ॥

छं० ॥ २३६ ॥

(१) मो.-पठाइ
(२) ए. कृ. को.-हसीय (३) ए. कृ. को.- अलिय

कविचन्द का राजा को एक पत्र और सँदेसा देना।

कग्गर अप्पह राज कर। मुष जंपह इह बत्त।
गौरी रतौ तुअ धरनि। तूं गोरी रस रत्त॥
छं० ॥ २३७॥

कवित्त॥ नथ्थि कन्ह चहुआन। धीर पुंडीरन निड्डुर॥
नहि सुमंत कयमास। राय गोयंद अषंडर॥
नहि सुलोह लंगरिय। अत्तताई सुभंग भर[1]॥
नहि पज्जन पंवार। सजष लष्षन बघघेल नर॥
चौहान भूप बंधुन बरन। सरन जाहि ढिल्लिय नयर॥
घर नयर राय रावर समर। सक सहाब गोरी वयर॥
छं० ॥ २३८॥

दासियों का पृथ्वीराज के पास जाना और कवि का पत्र देकर सँदेसा कहना।

दूहा॥ दासि संपत्तिय तिहिं महल। जहं संजोगि नरिंद॥
सनमुष सषी निरष्षयौ। मनो पृथौपुर इंद॥ छं० ॥ २३९॥
क्रम क्रम दासिय संचरिय। दस दस दिसि दरबार॥
पग मुक्कत उक्कत लिषिय। न्रिप निय नयन निहारि॥
छं० ॥ २४०॥
अन्य महल दासिय लिरए। परषि पयंपन जोग॥
उन्नित मुष रुष राज किय। न्रपति सपत्तौ लोग॥
छं० ॥ २४१॥
इय कहि दासिय अप्पि कर। लिषि जु दियौ गुर चंद॥
पहिलो औलो बंचियौ। भूमिय जाय नरिंद॥
छं० ॥ २४२॥

कबिचन्द का पत्र।

* षग तिस जस तिस दान तिस। तिस लग्गै हरि नाम॥

(१) मो.-मह सुम्भर

* यह दोहा मो० प्रति में नहीं है

अह निस ते मन वीर वर। तिस रष्षें संग्राम ॥

छं० ॥ २४३ ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आयौ असंभ। सह सेन सकिल्लिय ॥
दै चादर आदर अनंद। दिल्लिय दिसि मिल्लिय ॥
दस हजार व्राह्लनि विसाल। दस लाष तुरंगम ॥
तह अनेक भर सुभर। मीर गंभीर अभंगम ॥
आवरन वत्त चहुआन सुनि। प्रान रष्षि प्रारंभ करि ॥
सामंत नहीं सीमंत करि। जिन बोरहि ढिल्लिय सुधर ॥

छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज का पत्र फाड़ कर फेंक देना और शृंगार से वीर रस में परिवर्तित हो जाना।

दूहा ॥ सुनि कग्गर फान्यो सुकर। धर रष्षै गुर भट्ट ॥
तरकि तोन सज्यौ न्रपति। जिम बंदल्यौ रस नट्ट ॥

छं० ॥ २४५ ॥

काल किंचत किंचित भयौ। गुनियन मयन उढारि ॥
वर पंचों छिन छिन छुटति। लज्ज पंच बढ़ि पार ॥

छं० ॥ २४६ ॥

राजा का कुछ विमन होकर संयोगिता की ओर देखना और संयोगिता का पूछना कि यह क्यों।

प्रिय अप्रिय दिष्यौ बदन। किय जिय न्रप भौ सथ्थ ॥
हुँ पूछों वर बरह तुहि। कहि सम दौरति कथ्थ ॥छं०॥ २४७॥

राजा का कहना कि मुझे रात्रि के स्वप्न का स्मरण आगया है।

अदभुत इक दिष्यौ न्रपति। रयनि गलित [1]षिन प्रात ॥
सुरति एक सम्मुह रही। सा सुपनंतर बात ॥

छं० ॥ २४८ ॥

(१) ए. कृ. को-बिन

संयोगिता का कहना कि यह तो हुआ ही करता है।

कवित्त॥ कहै पीय पोमिनिय। कंत धन धन्यौ तोन धन॥
सुष सुमार आरोह। सार संसार मरन मन॥
दिन दिनयर निसि चंद। रेनि दिन दिनयर आवै॥
जंतु मंतु इह बरनि। श्रवन लग्गवि समुझावै॥
अरधंग धरा अरधंग हुअ। अरि अंग रंग अरधंग करि[१]॥
जिम हंस रहत तस हंसनिय। सर सुक्कै जिम पंक परि॥
छं०॥ २४९॥

राजा का कहना कि नहीं वह अरिष्ट सूचक अपूर्व स्वप्न ध्यान देने योग्य है।

दूहा॥ कहै राज सँजोगि सोँ। अदभुत चरित सुनंत॥
निय पाइन लग्गिय सुप्रिय। कहि कहि कंत सुमंत॥
छं०॥ २५०॥

संयोगिता का हठ कर कहना कि अच्छा तो बतलाइए।

कहै राज संजोगि सुनि। सुकथह कथ्य अकथ्य॥
श्रवन मंडि कनवज्ज निय। सा सुपनंतर अथ्य॥
छं०॥ २५१॥

राजा का रात्रि के स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त॥ अज्ज सुपन सुंदरिय। रंभ लग्गिय परि रंभह॥
तहं तुअ संग सुकिय। तेज अच्छिय रवि गिम्मह॥
तहं तुम मिलि झग्गरौ। गहहि करिवर कर जंपहि॥
तहं अदिष्ट आरिष्ट। दुष्ट दानव तन चंपहि॥
तहं तून हून नन अच्छरिय। हर हर हर सुर उप्पज्यौ॥
जानै न देव दैवान मति। कहन्निम्मान कह निप्पज्यौ॥
छं०॥ २५२॥

(१) ए. कृ. को.- अरि अरधंग अरंग करि

राजा का महलों से निकल कर कवि के पास आना।

सुनि उट्ठिय संजोगि। बचन जै जै जंपत जस॥
धनि हरति चहुआन। राज सिंगार बीर रस॥
इक्क मरन सुर नरां। मरन सिध साधक मुक्कै॥
भरन रहै जग नाम। चित्त रष्षत मत चुक्कै॥
अध अध करे अरियन दुअध। तूं उधंतदि अरधंग हौं॥
सामंतन को सो मंत करि। राजस अप्प पधारिहौं॥
छं॰॥ २५३॥

राजा के स्वप्न का हाल सुनकर कवि और गुरुराम का वलिदान और दान पुण्य करवाना।

सुपनंतर पुच्छनह। राजगुर कविगुर बुल्लिय॥
सो सुपनंतर सुनवि। तेन मुष तिन प्रति षुल्लिय॥
सुबर हथ्थं दै मथ्थ। अभय पंजर पढि दिन्नौ॥
सहस कलस भरि षीर। अरघ रवि ससि को किन्नौ॥
दस बलि दिसान दस महिष हनि। मित अनंत मित दान दिय॥
तिहि दिवस देव प्रथिराज दर। संझ सुभर भर महल किय॥
छं॰॥ २५४॥

दूहा॥ आवस्यक भावी विगति। कहा महिष बध होइ॥
जो जंतननि टारी टरै। नल' मंडल सम कोइ॥
छं॰॥ २५५॥

पृथ्वीराज का बाहर के सब समाचार और रावलजी की अवाई की खबर सुनकर पश्चात्ताप करना और मंत्रियों से कहना कि जिस तरह हो रावल जी को लिवा लाने का उपाय करो।

पद्धरी॥ किय महल राज आरंभ संझ। पद्धरी छंद वन्नैति मंझ'॥

(१) मो.-भल।

धुक्किय निसान हुक्किय जिकीव । दिसि दिसि रिसान धाए नकीव ॥
छं० ॥ २५६ ॥

घोल्लिय सुषग्ग हे गै पलान । रथ अरथ दिष्ट गुष्टिय गुमान ॥
पट नरम गरम जरि जिमित षान । जे लए दंडि सुरतान षान ॥
छं० ॥ २५७ ॥

आवध अरद्ध सिलहन सकोड़ । जंपरिय किरन किरनाल छोड़ ।
उच्छरिय मुच्छंब कुरि कपोल। बिदिन बिरह उत्तंग बोल॥छं०॥२५८॥

छह रंग छक्क आहत्त दान । दुल मझ्झ नंज बंबरि विपान ॥
लिषि भित्त भित्त कग्गर सुइष्ट। जोगिन जमाति जन मिलि गरिष्ट॥
छं० ॥ २५९ ॥

सनमंध प्रियापति चित्रकोट । बहु लज्ज बीस बासरति ओट ॥
पुछ्यौ प्रधानह हंकरि हकारि । कह करी प्रथापति जनु जुहार ॥
छं० ॥ २६० ॥

कामंध अंध बीसल कुलेन । अपराध कोटि काभिनि रसेन ॥
जित महल पुरष रस बस अरक्क । भुग्गवै भूप ते निज नरक्क ॥
छं० ॥ २६१ ॥

मो बर समान धरपति सुइष्ट । मो कहि न कवन डर कवन कष्ट ॥
गोग्रहन धरनि ग्रह अतिथ राज । रष्षहि सरीर सुष[1] कवन काज ॥
छं० ॥ २६२ ॥

अप अप्प दोष चित चिंति बीर । इहि लज्ज अज्ज छंडो सरीर ॥
धरनर नरिंद जोगिंद मंत । पति चित्रकोट अरु प्रिया कंत ॥
छं० ॥ २६३ ॥

उतर्यौ आय घर निगम बोध।मुहि दइन मुगध किन आय सोध ॥
अब करिव कोइ जिहि तिहि उपाय। जिम चलै अप्प ग्रिह समर राइ ॥
छं० ॥ २६४ ॥

रिस दिसर जान संजोगिबान । फिरि मझ्झ बोलि पिय सुनहु आनि॥
महिलान मंत पुच्छै न कोइ ॥ हुं कहौं नाथ ज्यों समझि होइ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुष ।

सब त्रिया बुद्धि नीची गिनंत । मानै न सच्च जो फुनि सुनंति ॥
संसार त्रिया बिन नाहि होत । संजोगि सक्ति सिव माँहि जोत ॥
छं० ॥ २६६ ॥
एह रन सरन्न बहु भांति जानि । गुन अगुन अविधि विधि सबै ठानि ॥
ग्रह चरित लषै जोतिग्ग माहिं । त्रिय चरित करत कवि सुति नाहिं ॥
छं० ॥ २६७ ॥
अन्नादि रीति सुनि एह बात । तिन काज कहै हम बुद्धि घात ॥
हम सुष्ष दुष्ष बंटन समथ्थ । हम सुरग बास छंडै न सथ्थ ॥छं०॥२६८॥
हम भूष प्यास अंग मैं देव । हम सर समान पति हंस सेव ॥
छं० ॥ २६९ ॥

संयोगिता का दासी भेजकर राजा को दरबार में से बुला भेजना ।

कवित्त ॥ अंग रष्षि संजोगि । नाम सुभना सुभ लच्छन ॥
रूप तेज अति तास । सकल कल ग्यान विचष्षिन[1] ॥
आइसु मझ्झ महल्ल । देषि द्रिग राजन उच्चिग ॥
गहर लज्ज बर बान । नेम निज नाथ स दुच्चिय ॥
इं छै सुमझ्झं संजोगि तुम । आवन राज षिनक्कनह ॥
सुनि सुभर सबै बैठन कहिग । संजोगी संपत्त ग्रह ॥ छं० ॥ २७० ॥
दूहा ॥ उठत राज मुह मुह हगनि । भरमंडौ सन सन्न ॥
त्रिया रसन तृपतो नहीं । राज काज नह मन्न ॥ छं० ॥ २७१ ॥

राजा का संयोगिता से पूछना कि तुम मन खिन्न क्यों हो ।

दिष्षिय राज संजोगि द्रिग । मन मलिन्न चलचित्त ॥
कहै राज पंगानि किम । तूं तन मनै अहित्त ॥ छं० ॥ २७२ ॥

संयोगिता का कहना कि जिस विषय पर दरबार में बात चल रही थी उसीके लिये मैंने भी आपको कष्ट दिया है ।

कहै संजोगिनि स्वामि तुम । सभा सु जंपिय बत्त ।

(१) ए. कृ. को.-सुलच्छिन ।

सोइ कारन प्रभु संभर्यौ। सुद्दों पगि कहौं सत्त ॥

॥ छं० २७३ ॥

संयोगिता का कहना कि मैंने रावलजी का उचित आदर सत्कार साध दिया।

कवित्त ॥ प्रथ[१] कंत आगमह। कंत मौकलि प्रधान दिय ॥
सुभर अन्न वस्तर सुगंध। आदर अदन्न किय ॥
ननद देउँ सिंगार। हार उत्तंग दुति मुत्तिय ॥
विजै करत विजैपाल। तात कै तात लिए निय ॥
विस लेष[१] प्रीति अंतर निमष। श्रवन राज आनंद दिय ॥
गुरमंच तंच जिम प्रौढ तिय। पिय पियूष ज्यौं रेनि पिय ॥

॥ छं० २७४ ॥

पानिघ्रत वर्णन।

चिय जु प्रीय उच्चरिय। चिय जु प्रिय बिन जिय[२] रष्षै ॥
अग्गि लोपि रव रवन। रवन बिन घटिन परष्षै ॥
पवन पंथ हाहंत। रहिन ग्राहत ग्रह तन्नै ॥
अंसु रष्षि तजि अंसु। हार सिंगारत जन्नै ॥
जुरि[३] चक्क चक्क बोलह अगनि। चरित चित्त सुज लोक चित ॥
अरधंग अंग संदेह नहि। सुहो मोहि पिय पंग पित ॥

छं० ॥ २७५ ॥

दूहा ॥ पिय बिन तनपन अनन धन। भूषन वसन न रत्त ॥
जीवन बिन जीवन रषन। तो पति एह परत्त ॥

छं० ॥ २७६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को आलिंगन करना।

* हँसि आलिंगन अंग दिय। जुरि लोयन पिय पीय ॥

---

(१) ए. द. को.-विषलेष। (२) ए. द. को. तिय।
(३) ए. कृ. को.-सुरि।
* यह दोहा मो. प्राति में नहीं है।

लव लावन्य समुंद सर। समुध सुधा रस दीय ॥

छं० ॥ २७७ ॥

आलिंगन समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ हँसि आलिंगन देत। उपजि आनंद अपारह ॥
कनक लता जनु उमडि। लपटि लग्गी सहकारह ॥
नृप पथान सुनि कान। अंसु फिरि उंअर समावत ॥
मानो आगम झरमंडि। विरह पावक बुझावत ॥
चहुआन चलत संजोगिता। पंग आनि करि कैं कहै ॥
संदेस सास संभरि धनी। पलन प्रान पचछै रहै ॥

छं० ॥ २७८ ॥

पृथ्वीराज का इंछनी आदि अन्य सब रानियों से मिलना।

दूहा ॥ अंतर गति अंतर मिलन। ए सुष बुद्धि न कोइ ॥
कै जानै बिछुरन मिलन। कै सरवग्य जु होइ ॥

छं० ॥ २७९ ॥

चिपति नयन बयनह चिपति। चिपति अलिंगन देह ॥
'रमन रमन्न विलास करि। फिरि दिय गंठि अछेह' ॥

छं० ॥ २८० ॥

इंछिय इंछिनि बंछिनौ। सथ्यनि सुचछ सुहाग ॥
दस रजनी दस घटिक मिलि। जानि भवर कुसुमांग ॥

छं० ॥ २८१ ॥

कवित्त ॥ सुनि इंछिनि पम्मारि। लज्ज सागर मति नागर ॥
सील लील लच्छिन बतीस। परसी रति आगर ॥
लज्ज मेर दुति तन सुमेर। सत्त सीताहि समानन ॥
अलप बानि नव रसति। जानि षट भाष प्रमाननि ॥
जानै न मानि पट्टै विनय। भ्रम्म रूप लचछी सहज ॥
मंडिनि निवचछ चहुआन कै। बंदि काम लीनी गहज ॥

छं० ॥ २८२ ॥

(१) ए. कृ. को.-गेठिय छेह।

दसर वन्नि दस घटति। फिरिग कुसमंग भवर जिम ॥
ग्रह ग्रहज्जि अलि मुक्कि। फिरिय कुंडली बाम इम ॥
नयन कंति फिरि देषि। चंद ओपम फिरि पाई ॥
कमल कोस ग्रह जुथ्थ। भँवर फिरि फिरि लग्गाई ॥
संभरे चित रावर समर। दइ दुबाह दुज्जन हरन ॥
जोगिंद राव जुग उप्परह। नर नरिंद करनी करनं ॥

छं० ॥ २८३ ॥

पृथ्वीराज का दरबारी पोशाक करके रावलजी से मिलने के लिये निगम बोध को जाना।

दूहा ॥ चल्यौ राज संबोधि तिय। लिय बहु भांति वसंत ॥
प्रीति सहित अंतर उमग। करन सु सीतल गत्त ॥

छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ कुसुम पट्ट सिर पग्ग। कुसुम रस गंध भवर रम ॥
श्रवन साष दोउ लष्ष। द्रव्य बहु मोरि[1] जोरि जम ॥
सुरत रत्त अंतरह। रत्त तन बिरत मोहि मनि ॥
फुरत हथ्थ आतुरत। घुरत नीसान धुक्कि सुनि ॥
मन मुरित मोह सेना सुरत। रुरत रात[2] सामंत लथ ॥
न्निप समर सीह राजन मिलन। निगम बोध भिट्टन सुतिथ[3] ॥

छं० ॥ २८५ ॥

दूहा ॥ करिय मतौ मँडलौ महल। छँडि चावँड बर बंद ॥
बगरि देव दरस्यौ न्रृपति। सुमन मानि आनंद ॥

छं० ॥ २८६ ॥

आनंदेषत भर सुभर। दिन दुलंभ न्रिप काज ॥
सुबर बंध बंध्यौ न्रपति। साहि गह्यौ जिहि साज ॥

छं० ॥ २८७ ॥

---

(१) मो.-मोहि।
(२) मो.-रास (३) ए. कृ. को.-कथ

तब न्रप उत्तर अप्प दिय । सभर सपत्तौ ग्रेह ॥
तासं मदन विधि अप करौ । होय भविस्यति[1] तेह ॥
छं० ॥ २८८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतमंडली सहित निगमबोध स्थान पर पहुंचना।

भुजंगी ॥ चल्यौ भेटनं राचि आवाज बज्जी । दिषी रत्ति निद्दी रही ताहि लज्जी ।
चवं मास पट्टं छहं रत्ति गज्जी । क्रमं मोह छंडे ग्रिहं क्रम्म लज्जी ॥
छं० ॥ २८९ ॥

फिरै कुंडली डोरि त्रिम्मान तज्जी । मनों पातुरं चातुरं नृत्त सज्जी ॥
मयं मोर मुत्तौ हयं हीर मंडे । मनों सेत नेतं सुमेरं प्रचंडे ॥
छं० ॥ २९० ॥

चल्यौ चाइ बहु आन दै कंध पानी । भई जैत आजैत आकास बानी ॥
रवी जोग बैठौ अकासं सनीरं । दिसं बाम ईसान सद्यौ[2] करीरं ॥
छं० ॥ २९१ ॥

फलं फूल पन्नं सुवंनं उड़ाये । मनौ बार बारं सुवाहं चढाये ॥
सबै बोलि सामंत सामंत मन्ने । भई अग्गि या चहूनं सब्ब जन्ने ॥
छं० ॥ २९२ ॥

चढे सथ्थ सामंत सब्बै समथ्थं । बजेह नीसान सद्दं अकथ्थं ॥
चढ़े.सेन चल्ले निगंबोध मग्गं । गए पासि सिंघं चरं चारि अग्गं ॥
छं० ॥ २९३ ॥

चल्यौ रावलं संमुहं मंगि वाजी । चढी सब्ब सेना भरं नामसाजी ॥
मिले संमुषं सेन दो राज राजं । दिठे[3] दिट्ठ दिट्ठी रसालं विराजं ॥
छं० ॥ २९४ ॥

मिले प्रेम पूरन्न सामद्धि राजं । बजे अत्ति उच्छाह सुच्छाह बाजं ॥
भए चित्त आनंद मानंद दूनं । बढी प्रेम बानं कुसल्लं सजूनं ॥
छं० ॥ २९५ ॥

मिले जाय बैठे निगंबोधु थानं । चितं दोय रंजै प्रियं प्रेम पानं ॥

(१) ए. कृ. को.-भविष्पति　(२) मो.- चद्यौ　(३) ए. कृ. को. ठिले

घने आदरं सादरं सद्दि बैठे। मनों काम देवं दोउ रूप पैठे॥

छं॥ २९६॥

एक दूसरे की कुशल प्रश्न होने पर पृथ्वीराज का रावल जी से अपना सब हाल कहना।

दूहा॥ कुसल त्तन पुच्छिय नृपति। हय गय भूमि भरान॥
ता पच्छै सुत सुति सुपरि। सुष दुष पुच्छि परान॥

छं॥ २९७॥

चौ अग्गानी सट्टि बर। पंगानी प्रभु आनि॥
रहे सूर सामंत ते। नव जम्महि पहिचान॥

छं॥ २९८॥

सा संषेपक उच्चरिय। बिहुन बिरह्ह तोल॥
जग्यराज जयचन्द ग्रह। पुच्छि करै तिहि बोल॥

छं॰॥ २९९॥

रावल जी का कहना कि स्त्री संभोग से भला कोई भी संतुष्ट हुआ है।

कवित्त॥ * सोम वंस राजिंद। नाम ससि वंध विचक्षन॥
घर घर प्रति इक रूप। रूप लावन्य सुलच्छिन॥
दस हजार तिय परनि। करेहु अग्गर महल्लं॥
एकादस हज्जार। गए संवच्छर चल्लं॥
चय कोडि लाष पच्चास हुत्र। पुच तास बलवँत सरस॥
रावल पयंप प्रथिराज सम। ते पन धपिय न काम रस॥

छं॰॥ ३००॥

कविचन्द का नवीन सामंतों के नाम कहना और रावल-जी का प्रत्येक से सादर मिलना।

दूहा॥ सामंतनि भेट्यो समर। प्रति प्रति आदर दीन॥
नाम कहे कविचंद नै। छंद अनुक्रम कीन॥ छं॰॥ ३०१॥

* यह कवित्त मो. प्रति में नहीं है।

नवीन् सामंतों के नाम ग्राम इत्यादि का परिचय ।

भुजंगी ॥ अपं अबबुआ राव भेथ्यौ नरिंदं । सतीधार राजा सुलज्जी समुद्दं ॥
मिल्यौ बग्गरी देव षीची प्रसंगं । गुनं दान मानं जया जास अंगं ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

लगे पाय कुम्मार दोनों सलोहं । लये लाय कंठं सनंमानं जोहं ॥
मिले सिंघ पामार साधार भारं । कमंडज्ज आरज्ज सारज्ज वारं ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

तबै आय परिहार सिंघं महन्नं । समं पीप बंधं सुभेथ्यौ सहन्नं ॥
तबै आइयै ताम आजान बाहं । अजम्मेर हुनौ समत्तौ उछाहं ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

लगौ रावलं पाय सा चाहुआनं । समं प्रीति रत्तौ सुमत्तौ द्रिसानं ॥
मिल्यौ चंद चंडी बिरद्दं सुवाचं । बलं बुद्धि षग्गं सुअंग्गसाचं ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अबद्दूत राजंग गोरष्प रायं । कलंकं सुरायं सु अंगं उहायं ॥
सुअं जन्ह हत्या सुमत्या कलेवं । धरा भ्रम्म रूपं कलौ देव एवं ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

गुरं राजजोगिंद इंदं सुभासं । अविख्यात मंचा सनं सब्रितासं ॥
अठं सट्ठिनीरथ्थ मो अज्ज पाया । मुषं देषते चित्त कोटं सुराया ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कवीताम आभासि जोगिंद रायं । मिले पुच्छि बत्तं कुसल्लं [१] ग्रहायं ॥
मिलेताम मासहंन्न सो बीर बीरं । धरै स्वामि भ्रम्मं सदा षग्ग धीरं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

लगे ईसरं दास चहुआन पायं । नरं नाह कन्हं सुअं सच्चभायं ॥
पऱ्यो राव परताप रायं षुमानं । बरं लज्ज दाहिम्म कै मासं पानं ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

सुअं भिंटि गहिलोत गोयंद राजं । समं तोल सामंत सोहं सु ताजं ॥
जयं जाम देवं सुजुद्धं जुधानं । बियं भूप भोरं सु जोरं बिधानं ॥
छं० ॥ ३१० ॥

(१) मो.-प्रासायं

बियं तेज मुत्ती सु जोति क्रिसानं। इमं तेज अंगं सुरंगं दिसानं॥
सदा एक पेमं रनं एक राजं। धजा एक बानै सदा एक लाजं॥
छं० ॥ ३११ ॥
दिठे दिट्ठ नेनं दुनेनं दुरूरं। दिसा दच्छिनी उत्तरे एक सूरं॥
मनो मेद पाटं सु घाटं पिछानं। पिता एक माता भयौ भ्रम्मथानं॥
छं० ॥ ३१२ ॥
बलीराइ बलिभद्र किय दास केली। जदों आमनी राज सोमेस भेली॥
नयं जीयविचार दुहुमात पित्ती। जयं जादवं संभरी रत्त रत्ती॥
छं० ॥ ३१३ ॥
दियं चित्रकोटं सोइ सुन्नि भारी। उठ्यौ षीझि पांवार बोल्यौ बिचारी॥
लग्यौ गुज्जरं पाइ षीची रिसानौ। मनों डंकिनी डक्क अग्गै उभानौ॥
छं० ॥ ३१४ ॥
तुमं पंच पुत्तानि सोमेस राजं। तमं बुझ्झियै सब्ब सामंत लाजं॥
तुमं मंड के डंड के बोल छंडौ। विना हथ्थ राजंन की हथ्थ षंडौ॥
छं० ॥ ३१५ ॥
अरी सिंधु लोपी जमं संधि रंगं। नही मग्ग लम्भों इको रत्न अंगं॥
सवै क्रूर क्रूरंम की बात षोटी। हसै जादवं पानि पामार जोटी॥
छं० ॥ ३१६ ॥
बढ़ी हास रासं रसं प्रेम बेली। बढी प्रेम नेमं सु मग्गं सहेली[१]॥
मनों प्रेम बानंक सज्ज्यौ अनूपं। कला नेह बढ्यौ रज्जे राजरूपं॥
छं० ॥ ३१७ ॥
बढी जोति जोती रसं रास रंगं। कला कुंदनं ओप बढ्यो सुअंगं॥
तबै बढ्ढि परिहार अप्पै सजोई। कही बात षुम्मान आसन्न होई॥
छं० ॥ ३१८ ॥
सषंसो कुसीहं परीहार बंगं। रनं रामदेवं सु षीची प्रसंगं॥
दमे दाहिमं सूर जोरं जुनेकं। परै जुद्ध सुरतान चामंड मेकं॥
छं० ॥ ३१९ ॥
समं जाम देवं तनं सब्ब काजं। सुवै[२] ब्रन्नइ राज जहों सु जाजं॥

(१) मो.-घटे बढे संग्रहं जीव सेली। (२) ए. क. को.-सजै।

घनं तर्क अवतर्क करि राजवेहं। मनों वेरि घुम्मान चावंड एहं ॥
छं० ॥ ३२० ॥

रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय विचारो।

कवित्त ॥ देषि चरित चहुआन। चित्त वत्तह ब्रिचारिय ॥
भय भवस्य न्रिम्मान। कन्न जंपिय उच्चारिय ॥
घटै बढै संग्रहै। जीव साषी सुष दुष्षह ॥
नव जम्मह चित्तंग। चित्त कोटह बंध रष्षह ॥
सम्भाव मरन गज मत्त जिम। पै संकर बंधी सरर ॥
आमंत मंत सामंत हौ। कौन मंत रष्यो सुधर[1] ॥ छं० ॥ ३२१ ॥
चहुआनां बर बंस। ब्रह्मवेदी जगि जन्ना ॥
ता राजन क्रत काज। सित्त सामंत उपन्ना ॥
पंच सूर इक अग्ग। जथ्थ कथ्थां कुल जाए ॥
दइय क्रम्म करि जोग। भोग जोगनिपुर आए ॥
ता अनुज राज भगिनी प्रिया। बर सु केलि रावर समर ॥
सगपन सु प्रीति बासुर दुदस[2]। निगम बोध उत्तरिय धर ॥
छं० ॥ ३२२ ॥
बोलि मंत सामंत। समर जंपहु न समर बर ॥
अग्गै ही चितरंग। बंध जस बंधि अप्प घर ॥
ए अभंग राजंग। मरन जानै तिन मानं ॥
इन कलंक नन ग्रेह। बीय कालंकन भानं ॥
सुभ्भर सुमहन रंमह सुभर। बर बीरग बिड्डारि घन ॥
जोगिंद राज जग हथ्थ बर। बर बिढार बिरुभ्भाय रन ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

रावल जी का राजमहलों को आना।

मिले राज रावल नरिंद। पूरंन प्रेम भर ॥
अति अनन्द मन चंद। नेह उच्छंग देह बर ॥

(१) मो.-कौन मंत रषहु जुधरं। (२) मो.-दुदत्त

मिलिय सुभर उम्भय नरिंद। पित नाम जाति तब ॥
कुसल बत्त पढि तत्त। हित्त आभित्त चित्त सब ॥
बैठे जुपंच सत्तह घटिय। लै रावर संमुह चढिग ॥
आए सुग्रेह नइंत नद। अति उच्छव सुच्छव बज्जिग ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पृथ्वीराज और रावलजी का संयोगिता के महलों में बैठना रावलजी का सरदारों सहित भोजन करना।

बाधा ॥ बैठे आइय ग्रेह पँगानी। अत संबोधि रुचिय रस बानी ॥
धवल उंच साला सम रुचं। अति सुष्पान[१] मनि थल सुचं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

आरोहित आसनयं सारं। अति गति रूप व्रन्न तन पारं ॥
जरा जरान अति अंग उभारं। देखत चित्त चढे के बारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

जे जे अध्यि पंग ग्रहं उत्तं। देषन चातुर चित्त अभूतं ॥
ग्रिह साला सिंगारि अनूपं। समताहीन इंद्र पुर रूपं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

तहां आसन्न उतंग विराजं। जे मानिक्क विवह मनि भ्राजं ॥
तहां रावल सम रोज अरोहं। मानहु इंद्र उदै उभ सोहं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

बोले सुभट सब्ब नर तथ्थं। जे भर अप्प जुरावल सथ्थं ॥
मुष मुष किद्ध प्रसंस विचारं। जे भर सथ्थ सुरावल सारं ॥
छं० ॥ ३२९ ॥

विवह सु सुद्ध वास रुचि रासं। मुक्ति गंध वर धूप सुवासं ॥
साष जाति अत्ति हित्त सुभावं। विवह सुगंध प्रसंसन पावं ॥
छं० ॥ ३३० ॥

कुसुम सुवास जाति अत्ति भत्ती। रूप अनूपम गुंथि सुगत्ती ॥

(१) ए. कृ. को.-सुपासन

कासमीर मगजा घनसारं । करदम जच्छ दच्छ तातारं ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

विधि विधि भंति सुरावल रच्चै । पूजा देव समान सुसच्चै ॥
अति आनन्द सेवं सह सारं । तब सुञ पंग आय परिहारं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

भोजन कजि अंतर आभासं । साला पहु संपन्न सहासं ॥
सालं असन अनुपम रूवं । आसन बैठि नेह पहु दूवं ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

बैठे सुभट सथ्थ सम थानं । आभासित भोजन विधि वानं ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन के समय किन किन पशु पक्षियों को रखना उचित है।

दूहा ॥ * कुर्कट निकुल करोंच कपि। हिरन हंस सुक मोर ॥
असन करत न्रप रष्षि ढिग । सूचक जहर चकोर ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ हंस छोत गति भंग। मोर कटु सबद उचारै ॥
रोवत क्रौंच कुरंग । सुकपि छंडत आहारै ॥
सूआ वमन करंत। निकुल कुर्कट मिचाई ॥
ऐसे चरित करंत। जानि आगंम दिनाई ॥
चकोर परस्पर हित रहित। कहत चंद पारष्ष लहि ॥
तिहि काज आनि रष्षत इनहि। भूपत भोजनसाल महि ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

षट रस व्यंजनों का ब्योरा।

दुविध अन्न फल चिविध। साक पंचम सुहारं ॥
जुग बिधि गोरस गुनित। ईष गति इक्क विचारं ॥
लवन तेज साहिंग। अठ्ठ दस भोजन भत्तं ॥

(१) मो.- देव

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है

ता अनंत गति रचे। गनिक को गनै कवित्त ॥
संजोगि एक अन्नेक सचि। षट रस पटु विधि लहिग सुचि ॥
सारदा मंति समुझै भलै। जुपहु आहारै अन्न रुचि ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

साटक ॥ विविध मुदित मन्नं शृंग घंटं सुसीषं।
जड़ दल पल पुहपं पल्लवं पंच साकं ॥
जल थल नभ मेतत् सास मेनं चिधापि।
षट रस ग्रत जुक्तं षटू चिधा भक्ष्यं भोज्यं ॥ छं० ३३८ ॥

भोजन हो चुकने पर दरबार होना। पृथ्वीराज का कवि चन्द और गुरुराम से कहना कि ऐसा उपाय करो जिसमें रावल जी घर चले जावें।

पद्धरी ॥ भोजन कीन रावल नरिंद। मन्नेव रुचि आनंद वृंद ॥
आहार जुत्त कपूर पन्न। सुर वास रोहि सो सोभि तन्न ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

कसमीर अंग रचै सुरंग। गिय गान तर्क मानि सुचंग ॥
रस रास हास बढ्यौ अपार, गुन गुंथि नेह भल्लो सुसार ॥
छं० ॥ ३४० ॥

अव चक्क चककरि सिंघ ताम। अग्गियां मंगि सासुर स्याम ॥
चढ़ि चल्यौ अप्प पति चित्त कोट। सम चढ़े सब्ब सामंत जोट ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

संप्रेरि सब्ब रावर सुताम। सामंत सपत्ते निज्ज धाम ॥
संवित्त अद्ध निसि घटी दून। सुष सेन किन्न रस रत्ति ऊन ॥
छं० । ३४२ ॥

उग्गौ सु सूर बज्जे घरयार। सम देब संष गज्जे सरयार ॥
जग्गे चिताम संजोगि राज। विचार मंत सामंत काज ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-भष्य

ग्रिह जाइ अप्प जौ प्रिथा कत्त। सुद्दरै काज अप्पां सुसंत॥
थपि मंत बोल्लि सामंत तब्ब। आये सुनंत सातब्ब सब्ब॥
छं०॥ ३४४॥

बुझ्झैव मंत सब्बां समूर। विधि कही राज कज्जां सजूर॥
सम चल्यौ तामै दिल्लिय नरेस। गौ सिंघ ताम चिंता सुमेस।
छं०॥ ३४५॥

मिल्लि उभै राज आनंद अंग। बरनेह देह रच्यौ सुरंग।
मिल्लि बैठि तत्त सम सथ्थथान। अन्योन्य रंग बढ्यौ रसान॥
छं०॥ ३४६॥

पल बीह घट्टि उप्पर दिनेश। दिन आय रुद्र मौ रत्त रेस॥
गुर राम आय बरदाय ताम। पठ्ठए काज पंगजा जाम॥
छं०॥ ३४७॥

आसिष्प उभै दिय राज हित्त। बैठे व कह्यौ न्रप करन बत्त॥
उठ्ठेव बैठि न्रिप अन्य थान। करि मंत कथ्थ रावर समान॥
छं०॥ ३४८॥

पट्टए चंद गुर राम ताम। जामानि जह गुज्जर सुराम॥
षीची प्रसंग पम्मार जैत। विधि कही अब्ब[1] कारन सुभैत॥
छं०॥ ३४९॥

सो करौं सबै बर बिधि उपाइ। जिम चलै अप्प ग्रह समर राइ॥
सो चलै जथ्थ[2] रावर नरिंद। लग्गी सु तलब कारज्ज भिंद॥
छं०॥ ३५०॥

दूसरे दिन प्रातः काल से दरबार लगना और पृथ्वीराज का रावलजी की बिदाई की तैयारी करना।

कवित्त॥ प्रथम जगिय घरियार। सेष रजनी परगट्टिय॥
फुनि जग्गिय तमचर। प्रसिद्ध करि सद्द उघट्टिय॥
पूरब दिसि चिय जगिय। मुकुर जिम आनन मंजिय॥
रवि कर जग्गिय अरुन। बदन रंगन जग रंगिय[3]॥

(१) ए. कृ. को.-अब्ब (२) ए. कृ. को.-सथ्थ
(३) ए. कृ. को.-बदन रंग निज गुरं गिय।

दुज कमल जगिय किन बचन अलि। जगिय जगत प्रथिराज जस॥
बरदाय चंद जग्गिय धरम। मारतंड मंडल दरसि॥छं०॥ ३५१॥

दूहा॥ सब सामंत सुबोल लिय। और चंद बरदाय॥
सुफल काज मन्नेंव सब। जो प्रिया कंत घर जाय।
छं०॥ ३५२॥

सोचि समझि सामंत सब। मिलि आए सब थान॥
स्वामि ध्रम्म हित चिंत कै। काम करन सु प्रमान॥
छं०॥ ३५३॥

कवित्त॥ ता सम दम सामंत। राज संजोगि सपन्नौ॥
हय हथ्थी स्रंगारि। हेम नग मुत्ति सु दिन्नौ॥
प्रिथो कंत घर जाहु। हमहि गोरी घर लग्गिथ॥
को जाने किं होय। कोय सज्जिय को भग्गिय॥
संचरो जाय संभरि धरा। अरु संभरि अव धारयौ॥
सब जंत रीति जम्मन मरन। समर राय बिचारियौ॥
छं०॥ ३५४॥

रावल जी का चित्रकोट जाने से नाहीं करना।

कुंडलिया। जंत रीति जम्मन मरन। चाय जु सुन्यौ नरिन्द॥
तुमहो जान प्रमान बर। बर दंपति सुष बंद॥
बर दंपति सुष बंद। रत्त सहजंत सुजानं॥
मरन मोह मोहन्न। मोह मन्नं रस ठानं॥
अंक निद्धि चित बंध। उलजि निधि मुक्की अथ्थह॥
उत्त ढुंढ बंस बर चतुर। मरम जानै सब जतंह॥
छं०॥ ३५५॥

पृथ्वीराज का पुनः विनीत भाव से कहना कि यह अरज मानिए परन्तु रावल जी का कुरुष हो कर उत्तर देना।

चिचंगी चितवनि परषि। निरषि पदन कुंमिलान॥
श्री अदब्ब हम रष्षही। इत्ती बेर प्रयान॥